thearyasamaj.org

वेदों की ओर लौटो...!

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १५ अंक १ १० जनवरी २०१५

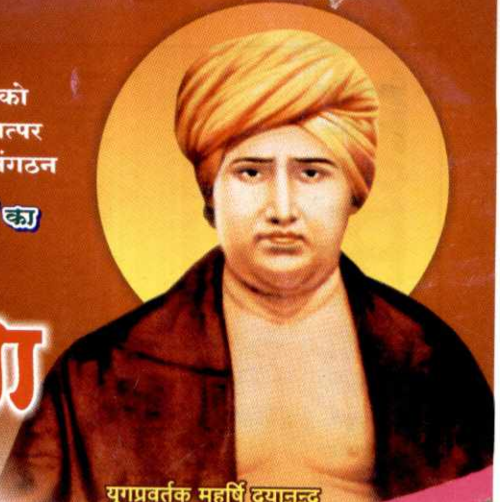

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

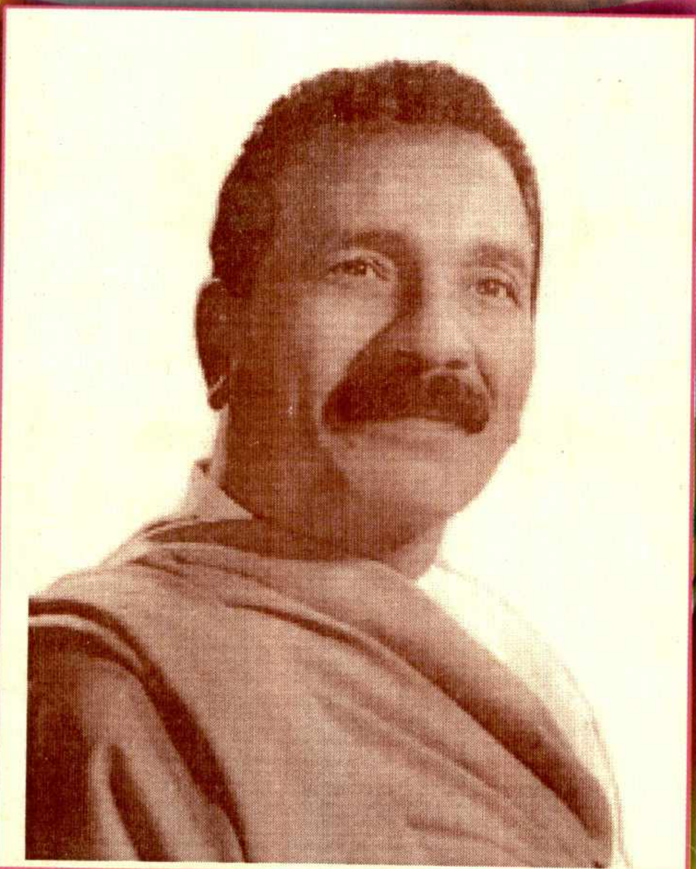

कर्मठ आर्यनेता आचार्य ब्र. राजसिंहजी आर्य

- जन्म -
१६/९/१९५३

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

- निधन -
५/१/२०१५

thearyasamaj.org

ओह, शोक....महाशोक ! आर्यनेता ब्र.राजसिंहजी चल बसे !

दिल्ली में दि. ११ जनवरी को आयोजित दिवंगत आर्य नेता स्व. ब्र. राजसिंहजी आर्य की श्रद्धाजंलि सभा में उपस्थित आर्य जगत के संन्यासी, विद्वान तथा प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारीगण ।

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११५ | कलि संवत् ५११५ | विक्रम संवत् २०७१

दयानन्दाब्द १९० | पौष | १० जनवरी २०१५

प्रधान सम्पादक
माधवराव देशपांडे
(मो.० ९८२२२९५५४५)

सम्पादक
प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य
(मो.० ९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो.०९४२११५११९०४), प्रो.देवदत्त तुंगार (मो. ०९३७२५४१७७७)

प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) सम्पादकीयम्....................................४
२) श्रुतिसन्देश/ सभा बैठक सूचना....................५
३) आर्य नेता ब्र. राजसिंहजी-जीवन परिचय................६
४) लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी......................१०
५) मानव केवल 'मानव' ही बनें........................१३
६) मेरे वतन (कविता)/प्रधानमन्त्रीजी को पत्र १५
७) शोक समाचार....................................१६
८) समाचार दर्पण....................................१७

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/ दयानंदांची अमृतवाणी....................१९
२) सुभाषित रसास्वादः/ काव्यकुंज........................२०
३) गाथा वाचू दयानंदांची..............................२१
५) विज्ञान व अध्यात्माचा संगम..........................२२
५) पर्यावरण पोषक व विज्ञाननिष्ठ-वै.यज्ञ....................२४
६) वार्ता विशेष......................................३०
७) शोकवार्ता..३१
८) दयानंद कॉमिक्स...................................३२

• प्रकाशक •
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

• मुद्रक •
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज,परली-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रु. ५०/-
आजीवन रु. ५००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होना

thearyasamaj.org

सम्पादकीयम्

हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार!

५ जनवरी की दोपहर आर्य जगत् के लिए वज्राघाती सिद्ध हुई। कर्मठ आर्य नेता व ओजस्वी विद्वान् ब्र. राजसिंहजी आर्य के निधन से आर्यों पर मानों पहाड ही टूट पडा। सुननेवाला हर एक हक्का–बक्का रह गया। आखिर नियति के शाश्वत नियम को स्वीकारना ही पडता है। आर्य समाज की छवी को अन्तर्राष्ट्रीय रूप देनेवाला ऋषि का एक दीवाना हमसे बिछुड गया। हृदयगति रूक जाने के बहाने दिल्ली के राममनोहर लोहिया अस्पताल में इस क्रान्तिकारी व्यक्तित्त्व ने अन्तिम सांस ली और हमें छोडकर अनन्त यात्रापर चल पडे। एकतरह से हमारा उज्ज्वल भविष्य ही अन्धःकारमय हो गया है। उनमें अदम्य शक्ति थी, जिससे आर्यों को काफी आशाएं थी।

ब्र. राजसिंहजी की गणना धुन के धनी कर्मठ नेताओं में होगी, जो **'कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्।'** इस संकल्पशक्ति को हृदय में संजोकर रात–दिन ऋषि के सपनों को साकार करने में जुटे रहे। सफेद धोती, कुर्ता व कन्धे पर गेरूआ उत्तरीय वस्त्र पहने उंचे कदवाले हंसमुख राजसिंहजी, जब नम्रतापूर्वक आर्यों के सम्मुख उपस्थित होते, तो सभी जन हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव करते। प्रथम दर्शन में ही इनके मधुर व्यवहार से हर कोई प्रभावित हुए बिना न रहता। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहा, जहां राजसिंहजी की पहुंचें न हो। प्रबल ईश्वरविश्वासी ब्र.राजसिंहजी का जीवन आध्यात्मिकता से ओतप्रोत था। बडी तन्मयता के साथ वे साधना करते थे। श्रद्धा व भक्ति से उनके द्वारा प्रस्तुत वेदकथाओं व प्रवचनों को सुनकर श्रोतागण भावविभोर हो जाते थे। यज्ञीय अनुष्ठान को बडे सुचारू ढंग से कराने में उनका सदैव आग्रह रहता था।

आर्यवीर दल द्वारा युवाशक्ति को उभारने में राजसिंहजीं ने बडे प्रयास किये। उनके नेतृत्व में दिल्ली की आर्य समाजें जग गयी और अन्य प्रान्तों को भी नई प्रेरणा मिली। दयनीय अवस्था में सार्वदेशिक सभा को भी आपने नई दिशा दी। उनके संयोजन में २००६ व २०१२ के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन ऐतिहासिक दृष्टि से काफी सफल सिद्ध हुये। तब से वैश्विक आर्य महासम्मेलनों की देश–विदेशों में श्रृखंला आज भी जारी हैं। उनके इस महत् योगदान को आर्यजगत् भूला नहीं सकेगा। दुर्भाग्य से उनका **सौ नैष्ठिक ब्रह्मचारी बनाकर सर्वत्र प्रचार कराने** का सपना अधुरा ही रह गया। ऐसे नक्षत्रसम तेजस्वी आर्यनेता, ओजस्वी व्याख्याता व यशस्वी प्रचारक के अकस्मात चले जाने से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई हैं। उन्हें हमारा श्रद्धावनत अभिवादन!

–डॉ.नयनकुमार आचार्य

thearyasamaj.org

परमात्मा के गुणधर्म

पुरूषऽएवेदँ् सर्वं यद् भूतं यच्चं भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ।।२।। (यजु.३१/१)

पदार्थः- हे मनुष्यों ! **(यत्)** जो **(भूतम्)** उत्पन्न हुआ **(च)** और **(यत्)** जो **(भाव्यम्)** उत्पन्न होनेवाला **(उत)** और **(यत्)** जो **(अन्नेन)** पृथिवी आदि के सम्बन्ध से **(अतिरोहति)** अत्यन्त बढता है, उस **(इदम्)** इस प्रत्यक्ष, परोक्ष रूप **(सर्वम्)** समस्त जगत् को **(अमृतत्त्वस्य)** अविनाशी मोक्षसुख वा कारण का **(ईशानः)** अधिष्ठाता **(पुरूषः)** सत्य गुण, कर्म, स्वभावों से परिपूर्ण परमात्मा **(एव)** ही चरता है

भावार्थः- हे मनुष्यों ! जिस ईश्वर ने जब-जब सृष्टि हुई तब तब रची, इस समय धारण करता फिर विनाश करके रचेगा । जिसके आधार से सब वर्त्तमान है, और बढता है उसी सबके स्वामी परमात्मा की उपासना करो, इससे भिन्न की नहीं ।

(महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य से साभार)

|| ओ३म् ||

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम् ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

लन्दन के समाजसेवी - स्व.धर्मपालजी भसीन एवं
स्व.श्रीमती शान्तिदेवी मायर की पावन स्मृति में

* स्वास्थ्यरक्षा एवं चिकित्सा शिविर अभियान *

** १ से ३ फरवरी २०१५.......... आर्य समाज, वाशी जि. धाराशिव*
** ४ से ८ फरवरी २०१५.......... आर्य समाज, किल्लेधारूर, जि. बीड*
** ९ से १३ फरवरी २०१५....... आर्य समाज, रेणापुर, जि.लातूर*
** १४ से १८ फरवरी २०१५.... आर्य समाज देगलूर, जि. नांदेड*
** १९ से २३ फरवरी २०१५.... आर्य समाज, धर्माबाद , जि. नांदेड*
** २४ से २६ फरवरी २०१५..... आर्य समाज मुदखेड , जि. नांदेड*

मार्गदर्शक - पू. विज्ञानमुनिजी, डॉ. ब्रह्ममुनिजी, पं. सुधाकरजी शास्त्री, पू. ब्रह्मनादमुनिजी व पं. प्रतापसिंहजी चौहान

सभी स्वास्थ्यप्रेमी सज्जनों व देवियों से निवेदन है कि वे इन शिबिरों में सहभाग लेकर स्वास्थ्य लाभ उठावें। तथा इन शिविरों को सभी मिलकर सफल बनावें

विनीत-महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, परली-वै.

thearyasamaj.org

आर्य नेता ब्र. राजसिंहजी आर्य -एक परिचय

–विनय आर्य (मन्त्री, दिल्ली आर्य प्र.सभा)

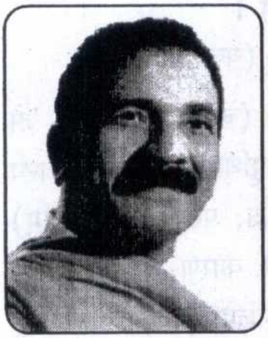

ब्र. राजसिंह आर्यजी का जन्म हरियाणा प्रान्त के झज्जर जिले के ग्राम आसौदा में श्री रणजीतसिंह एवं माता श्रीमती चन्द्रवती के घर में १६ सितम्बर, १९५३ को हुआ। ५ भाई सर्वश्री ओमप्रकाश आर्य, डॉ. कर्णसिंह, स्वयं स्व.राजसिंह आर्य, श्री विजय आर्य एवं श्री अनिल आर्य, एवं चार बहनें श्रीमती शकुन्तला देवी, श्रीमती कान्तादेवी, श्रीमती पुष्पा देवी एवं श्रीमती शारदा देवी हैं। आर्यसमाज का ज्ञान उन्हें अपने ननिहाल से हुआ और दिल्ली में श्री धर्मपाल आर्य जी के पूज्य पिता लाला दीपचन्द आर्यजी के सम्पर्क में आने से बढा।

स्वामी सत्यपतिजी के सम्पर्क में आने के पश्चात् आर्यसमाज के प्रति गहरी रूचि होती गई और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के प्रति झुकाव बढता चला गया। और आपने ब्रह्मचर्यव्रत का संकल्प कर लिया, साथ ही युवाओं के बीच आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करने के लिए सक्रिय हो गए। आर्य वीर दल के सम्पर्क में आने के पश्चात् आर्य वीर दल के शिविरों में भाग लिया और उसके पश्चात् युवाओं में कार्य करने के लिए कई संगठनों के माध्यम से कार्य को आगे बढाया। प्रचार-प्रसार के माध्यम से अपने कार्यों को और आगे ले जाने के लिए आपने मुम्बई का रूख किया। वहां भी आर्य समाज के कार्य में सक्रिय रहते हुए आर्यसमाज के कार्य में सक्रिय रहते हुए आर्यसमाज के सभी विद्वानों एवं कार्यकर्त्ताओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य को आगे बढाया।

१९९० के लगभग आप दिल्ली वापस आ गए और पुनः दिल्ली के आर्यसमाज के कार्यों में रूचि लेना आरम्भ कर दिया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोधजी के कहने पर आपने आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की मन्त्री के रूप में बागडोर सम्भाली। इसके पश्चात् संचालक के रूप में १९९५ में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के महामन्त्री के रूप में आपने देश एवं विदेश में आर्य वीर दल के कार्य को आगे बढाया। इसके पश्चात् वर्ष २००३ में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान के रूप में जिम्मेदारी सम्भाली एवं सभा को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाने के लिए हर प्रकार का श्रम किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से अनेक कार्यों में उनके योगदान को सदैव याद किया जाएगा।

आर्य समाज के साथ साथ अनेक संस्थाओं में ५ जनवरी की दुर्भाग्यपूर्ण सुबह

thearyasamaj.org

अचानक हृदयाघात का बहाना लेकर के उन्हें हमसे छीन ले गई । उनका जीवन उनका कार्य दोनों ही अपने आप में निराले थे । हमेशा आर्यसमाज के इतिहास का भाग बनकर वे चमकते रहेंगें । उनके नए आरम्भ किए गए कार्य आर्य समाज में नया उत्साह लाने का कार्य करते रहे हैं, जिन कार्यों को उन्होंने आरम्भ किया उनको आगे बढाते रहना ही उन्हें सच्ची श्रद्धाजलि होगी ।

●●●●●

ब्र. राजसिंह आर्यजी के कार्यों का संक्षिप्त दिग्दर्शन

■ १९ वर्ष की आयु में शराब बंदी आन्दोलन किया और चार दिन तक तिहाड जेल में रहें ।

■ युवकों में कार्य करने हेतु युवक परिषद बनाई, जिसमें नौजवानों को व्यसनों से मुक्त करने हेतु जनजागरण एवं अनेक शिविरों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की महानता हेतु युवको को प्रेरणा प्रदान करने का कार्य करते रहें ।

■ दिल्ली से एटा मैनपुरी तक साइकिल रैली द्वारा गाँव-गाँव में नशामुक्ति, जुआ, माँस आदि के साथ-साथ अंधविश्वासों के विरूद्ध जन-जागरण जन आन्दोलन किया, भाषणों के द्वारा लोगों को प्रभावित करने की कला ईश्वरप्रदत्त रही ।

■ महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी के निर्वाण शताब्दी १९८३ अजमेर में जिसमें विश्व के पाँच लाख लोगों की भागीदारी हेतु स्वयं सेवकों की व्यवस्था का दायित्व श्री सिंह को प्राप्त हुआ । इस हेतु दिल्ली से १००० युवकों, युवतियों की स्पेशल ट्रेन लेकर अजमेर महासम्मेलन की सारी व्यवस्था संभाली एवं सम्मलेन में युवक सम्मेलन के संयोजक के नाते संयोजन किया एवं लाखों लोगों की सभा का वीरता पूर्वक संबोधित किया ।

■ राममंदिर आन्दोलन में ७० युवकों के साथ बी. एल. शर्मा के नेतृत्व में १४०० लोगों सहित गिरफ्तारी दी । माछरा जेल में चार दिन रहे तथा वहां पर विशाल यज्ञ करके सभी को श्रीराम के आदर्शों पर जीवन भर की प्रेरणा की ।

■ १९८४ में सिखों पर अमानवीय अत्याचार होने पर अनेक सिख भाईयों की सुरक्षा सेवा की ।

■ समाज में अनेक कुरीतियों व अन्याय के खिलाफ जागृति पैदा करने हेतु १९८५ में मुम्बई जाकर फिल्म के माध्यम से अधिकतम लोगों तक प्रचार करने हेतु एक फिल्म **'अनोखा इन्सान'** बनाई । फिल्म लाईल में रहकर भी किसी प्रकार के व्यसनों से दूर रहकर अपने आदर्शों में कोई समझौता नहीं किया ।

■ जे.पी. आन्दोलन में भी आपने उत्साह पूर्वक भाग लिया ।

■ १९९० में पुनः दिल्ली में आकर माता की सेवा के साथ सामाजिक कार्य में जुट गए और आत्मशक्ति बढाने के लिए ६१ दिन तक जंगल में कुटिया बनाकर अदर्शन मौन रहकर एवं उपवास करके गायत्री की

thearyasamaj.org

साधना की । उससे अदम्य आत्मशक्ति प्राप्त हुई ।

■ १९९३ में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के महामन्त्री का दायित्व स्वीकार किया। महामंत्री पद का दायित्व प्राप्त होने पर समूचे भारत का भ्रमण किया और अनेक प्रान्तों में आर्य वीर दल की स्थापना कर नौजवानों को समाजकार्य हेतु आगे लाये। इसके माध्यम से अनेक बार जुलूस निकालकर जन जागरण किया तथा सैकडों व हजारों युवकों के शिविर लगाकर शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति हेतु तैयार किया ।

■ सन १९९८ में विश्व स्तर पर युवकों को जोडने के लिए एक **अन्तर्राष्ट्रीय आर्यवीर महासम्मेलन** बुराडी मैदान दिल्ली में किया, जिसमें नौ देशों एवं भारत के सभी प्रान्तों से ६०००० लोगों की भागीदारी रही और इसमें पहले दिन तूफान आने पर भी नौजवानों को प्रेरित कर पुनः उसी दिन सम्मेलन आरम्भ किया और इस सम्मेलन में तत्कालीन मुख्यमंत्री साहिबसिंह वर्मा जी ने जो आपके अनन्य मित्रों में से एक थे, बहुत बडा योगदान दिया ।

■ पुनः अंतरात्मा की आवाज से दो महीने गंगोत्री के सघन जंगलों की गुफा में रहकर साधना की ।

■ सन २००३ में दिल्ली की समस्त आर्यो के संगठन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित हुए, जन साधारण में सामाजिक व राष्ट्रीय कार्य हेतु जो आपको दायित्व दिया, उसे आपने पूर्ण ईमानदारी से अबतक निभाया, और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से सम्पूर्ण भारत में और विश्व के अनेक देशों में प्रचार प्रसार करने का अवसर मिला । आर्य जगत् में नवजागरण हुआ, अनेकों सम्मलेन, अनेकों आन्दोलन एवं अनेकों सामाजिक कार्यों द्वारा जनचेतना उत्पन्न हुई

■ २००६ में एक अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मलेन २५,२६ तथा २७, २८ अक्टूबर में दिल्ली के जापानी पार्क में किया गया और जिसके संयोजक सर्वसम्मति से आपको बनाया गया और इस सम्मेलन में विश्वभर से २१ देशों के लोगों ने भागीदारी की और डेढ लाख लोगों की उपस्थिति रहीं । इस सम्मलेन में लोगों में एक नया उत्साह उत्पन्न हुआ और इसी अवसर पर आप ने हर वर्ष किसी न किसी एक देश में सम्मेलन करने की घोषणा की और यही सम्मेलन क्रमशः अमेरिका, मॉरीशस, सुरीनाम, हॉलैंड में तय किये गए तथा रूस और अर्मेनिया में विशेष संगोष्ठी द्वारा आर्य समाज की स्थापना की पुनः २०१२ में २६,२७,२८ एवं २९ अक्टूबर को दिल्ली के जापानी पार्क में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का निश्चय हुआ । पिछले सम्मेलन की सफलताओं के कारण पुनः इस सम्मेलन के संयोजन का कार्यभार आपको ही सौंपा गया और इस बार इस सम्मेलन में ३१ देशों के तीन लाख से अधिक लोगों की भागीदारी हुई और सम्मेलन ऐतिहासिक सम्मेलन हुआ । सामाजिक कार्यों हेतु कुछ संगठनों के बनाने का कार्य किया ।

thearyasamaj.org

■ १९७६ में आपातकालीन काल में सभी सामाजिक संस्थाएं बंद होने से आपने एक जनता के हितों के लिए संघर्ष समिति बनाई जिसका नाम **श्री नव आदर्श जन हित संघ** रखा इसके माध्यम से निर्धन एवं कमजोर वर्ग के लोगों को कार्य करने हेतु अनेक प्रकार की सहायता दी जाने लगी। विधवाओं को काम करने हेतु सिलाई मशीनें बच्चों को स्कूल की किताबें और ड्रेस, अनेक गरीब बच्चों की शादी हेतु सहायता दी जाने लगी।

■ एक संस्था **श्री सत्य सनातन वेद मंदिर समिति** के नाम से बनाई, इसमें ऐसे वृद्ध जिनकी सन्तानें उत्पन्न नहीं हुई या उत्पन्न होने के बाद उनकी मृत्यु हो गई, जो बुढापे में अकेले हैं, जिनको सँभालने वाला कोई भी नहीं है, उनकी सम्पूर्ण व्यवस्था निःशुल्क करने का निश्चय करती है और हमारे परिवारों में जो आज गृहस्थ संस्कार विहीन हो रहे हैं, उनके लिए आपने एक पाठ्यक्रम बनाया है, जिससे परिवार एवं संतानों को आदर्श एवं संस्कारवान् बनाया जा सके तथा आत्मिक और शारीरिक उन्नति हेतु वैदिक साधना ध्यान आदि के द्वारा स्वस्थ एवं आत्मशांति योग्य बनाया जा सके। आपने अनेक आर्य संस्थाओं एवं संगठनों के विभिन्न पदों पर सेवा की तथा अनेक कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं -

■ आपने अनेक आर्य संस्थाओं एवं संगठनों के विभिन्न पदों पर सेवा की तथा अनेक कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं -

१. गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय की सीनेट में लम्बे समय तक सीनेटर।
२. प्रतिष्ठित सदस्य, आर्य केन्द्रीय सभा।
३. प्रधान श्री सत्य सनातन वेद मन्दिर समिति एवं निर्माणाधीन वृद्ध आश्रम रोहिणी
४. मंत्री, आर्य समाज सब्जीमंडी दिल्ली।
५. दिल्ली में ४० स्कूलों की आर्य विद्या परिषद के १२ वर्षों तक प्रधान।

■ देश एवं विदेशों में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों के संयोजक के रूप में कार्य यथा दिल्ली (२००६), शिकागो-अमेरिका (२००७), मॉरीशस (२००८), सुरीनाम-दक्षिण अमेरिका (२००९), हॉलैंड - नीदरलैंड (२०१०), रूस व आर्मिनिया में आर्य समाज स्थापना (२०११), दिल्ली (२०१२), साऊथ अफ्रीका - डरबन (२०१३) सिंगापुर, बैंकाक - थाईलैंड (२०१४)

■ गुरूकुलों द्वारा भारतीय संस्कृति, गुरूकुल शिक्षा प्रणाली तथा संस्कृत शिक्षा को बढाने हेतु गुरूकुल कांगडी के साथ झज्जर, लढोत, (रोहतक), वडलूर (आ.प्र.), इंद्रप्रस्थ (फरीदाबाद), भादस (मेवात), मंझावली इन गुरूकुलों के साथ ही चोटीपुरा व वाराणसी कन्या गुरूकुलों को सहाय्यता व मार्गदर्शन।

ब्र. राजसिंह आर्यजी के जीवन में किए गए कार्यों का उपरोक्त संक्षिप्त विवरण मात्र है। समस्त जीवन के कार्यों का वर्णन करना इस छोटेसे लेख की सीमा से बाहर है।

(सा.आर्य सन्देश से साभार)

thearyasamaj.org

जयंतीदिवस (५ जनवरी) पर विशेष..

लौहपुरूष स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी

– **स्वामी सदानन्द** (दयानन्द मठ, दीनानगर)

महर्षि दयानन्द १८७६ ईस्वी में पंजाब आए। उनके शुभागमन से इस वीर भूमि के निवासियों में चेतना का संचार हुआ। नव जागरण की इस शुभ वेला में **सरदार भगवानसिंह** के घर पौष मास विक्रम संवत् १९३४ की पूर्णिमा को बालक **केहरसिंह** ने जन्म लिया। यही बालक आगे चलकर **स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी** के नाम से विख्यात हुआ। **लुधियाना** जिला ने राष्ट्र को कई विभूतियां दी हैं। राष्ट्रवीर लाजपतराय, यशस्वी दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द तथा स्वाधीनता सेनानी साहित्यकार स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक भी इसी की देन थे। इसी जिला के **मोही** ग्राम में जन्म लेकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने इसे गौराविन्त किया। श्री पं. सत्यव्रतजी सिध्दान्तालंकार पूर्व कुलपति गुरूकुल कांगडी भी इसी जिले के हैं।

बालक केहरसिंह के पूर्वज हल्दी घाटी से आकर यहां बसे थे। उनकी रगों में राजस्थान के शूरवीरों व बलिदानियों का उष्ण रक्त बह रहा था। वीरभूमि पंजाब के वातावरण में पलकर केहरसिंह **यथा नाम तथा गुण** बन गये। सरदार भगवानसिंह जी की पत्नी का देहान्त हो गया, इसलिए केहरसिंह का लालन-पालन उनके ननिहाल कस्बा **लताला** में हुआ।

आर्य समाज का परिचय –

पिता जी की चाह थी कि वह सेना में जनरल कर्नल बनें, परन्तु केहरसिंह वैभवशाली परिवार को त्यागकर संन्यासी बन गये। धर्मशास्त्रों का पठन – पाठन, संस्कृत का अभ्यास व उपदेश देते हुए कई वर्ष केवल कौपीनधारी रहे। आर्य समाज के नेताओं व विद्वानों मे सर्वप्रथम आपने ही (१९५७ विक्रम) संन्यास लिया।

विदेशों में –

संन्यास लेकर आप ३-४ वर्ष के लिए दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में धर्म प्रचार करते रहे। इसके लिए किसी सभा व संस्था से अपने कोई अर्थिक सहायता नहीं ली। स्वदेश लौटे तो पं. बिशनदास जी की आज्ञा से विधिवत आर्य समाज के कार्य में जुट गये। योगाभ्यास, स्वाध्याय, राष्ट्रभाषा प्रचार, ग्राम सुधार, ब्रह्मचर्य, व्यायाम आदि के लिए कई वर्ष रामामण्डी को केन्द्र बनाकर कार्य किया। फिर लुधियाना को केन्द्र बना लिया। आपके तप, तेज व त्याग से सारा पंजाब प्रभावित हुआ।

पुनः विदेश यात्रा –

१९१४ ई. में आप मारीशस में वेद प्रचार के लिए गये। तीन वर्ष तक आपने वहां धर्मोपदेश करते हुए वहां के लोगों को संगठन सूत्र में बांधा। भारत के राष्ट्रीय हितों की वहां रक्षा की। राष्ट्रभाषा का प्रचार किया। जनता का नैतिक उत्थान तथा चरित्र निर्माण किया।

thearyasamaj.org

स्वतन्त्रता संग्राम में –

१९१६ ई में स्वदेश लौट कर आर्य समाज के कार्य के साथ राष्ट्रीय स्वाधीनता सग्राम में कुद पडे। १९१९ ई. में मार्शल ला के दिनों मे पण्डित मदनमोहन मालवीयजी की प्रेरणा पर आपने कांग्रेस को विशेष सहयोग दिया। १९२० ई. में बर्मा गये। वहां धर्म खुल्लम खुल्ला प्रचार किया। अंग्रेज सरकार की आंख में आप कांटे की भांति चुभने लगे।

काल कोठरी में –

१९३० ई. में पंजाब कांग्रेस के सब नेता जब जेलों में बन्द थे, तो आपने सत्याग्रह को चलाया। डा. मुहम्मद आलम के जेल जाने पर आप कुछ समय के लिए प्रदेश कांग्रेस के प्रधान भी बनाए गये। इस काल में आंध्र प्रदेश के विख्यात कांग्रेसी नेता व स्वतन्त्रता सेनानी पं. नरेन्द्र (हैदराबाद) इत्यादि को अपने जेल भेजा।

१९३० ई. में लाहौर में कांग्रेस की एक प्रचण्ड सभा से अध्यक्ष पद से एक भाषण देने पर आपको बन्दी बना लिया गया। उपदेशक विद्यालय (Missionary College) की भी तलाशी ली गई।

सेना मे विद्रोह का आरोप –

१९४२ ई. में **भारत छोडो** आन्दोलन का प्रचार कर रहे थे कि आपने भापडौदा कस्बा हरियाणा में एक बैठक बुलाकर हरियाणा के चौधरियों से कहा कि सेना में कार्य करनेवाले अपने पुत्रों तथा सगे सम्बन्धियों से आप कहें कि 'सत्याग्रहियों पर गोली मत चलाएं।' आप की हरियाणा यात्रा का अपूर्व प्रभाव पडा। सरकार यह सहन न कर सकी। वायसराय के विशेष आदेश से आप को शाही किला लाहौर में बन्द करके अमानुषिक यातनाएं दी गई। किला से छोडे गए तो विश्व युद्ध की समाप्ति तक दीनानगर में नजरबन्द किए गए। आप पर कई प्रतिबन्ध लगाए गए। जब आप शाही किला में बन्दी बनाए गए तो पंजाब के गवर्नर के वध का षड्यन्त्र करने का भी आरोप लगाया गया।

क्रांतिकारियों को शरण –

आप दस वर्ष श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय के आचार्य पद पर आसीन रहे और सैंकडों योग्य शिष्य आर्य समाज़ को प्रदान किये, जो उनके चरण चिन्हों पर चलते हुए आर्य समाज का प्रचार कर रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेदप्रचार अधिष्ठाता का कार्यभार भी आपके कन्धों पर था। तब आपने समय-समय पर कई भूमिगत क्रांतिकारियों को लाहौर में शरण दी।

१९३८ ई. में दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना करके इसे मानव केन्द्र बनाया। धर्म प्रचार संस्कृत प्रसार का तो यह केन्द्र ही है। सहस्त्रों रोगी प्रतिदिन यहा धर्मार्थ औषधालय से चिकित्सा करवाते हैं। इस आश्रम में भी देश के स्वतन्त्र होने तक कई क्रांतिकारी देशभक्त भूमिगत होने पर शरण पाते रहे, महात्मा गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने के लिए स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज के सुशिष्य यति जी को विशेष रूप से दयानन्द मठ से ही

thearyasamaj.org

सत्याग्रह करने की आज्ञा दी थी । इस समय तक उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी पूज्य स्वामी सर्वानन्दजी महाराज मठ के अध्यक्ष थे ।

नवाबों से टक्कर–

लुहारू में तो आप पर कुल्हाडों व लाठियों से प्राणघातक प्रहार किये गये । आजन्म ब्रह्मचारी ६५ वर्ष की आयु में इन भयंकर प्रहारों में भी अडिग खडे रहे । आप के सिर पर इन घावों के इक्कीस चिन्ह थे । एक तो बहुत बडा निशान दूर से ही दीख जाता था ।

विदेशों में राष्ट्रीय दूत –

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् भी एक बार आप पूर्वी अफ्रीका में आर्य समाज के प्रचार के लिए गए । देश स्वतन्त्र हुआ तो भारत सरकार की विशेष प्रार्थना पर आप पूर्वी अफ्रीका व मारीशस की यात्रा पर गये । आपने इन देशों मे रहने वाले भारतीयों की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक अवस्था का अध्ययन किया और विदेशों में भारतीय हितों की रक्षा के लिए बडा काम किया । मारीशस की स्वतन्त्रता के लिए आपने मार्ग प्रशस्त करने के लिए बडा काम किया ।

बहुमुखी प्रतिभा – तेजस्वी व्यक्तित्व

अस्पृश्यता निवारण व दलितोद्वार के लिए आपने अविस्मरणीय काम किया । स्वदेशी प्रचार, गोरक्षा, राष्ट्रभाषा प्रचार, स्त्री शिक्षा के लिए आपने सारे देश का कई बार भ्रमण किया । पीडित सेवा के लिए सदैव अग्रणी रहे । आप कई भाषाओं के विद्वान लेखक, सुवक्ता व इतिहास के सर्मज्ञ विद्वान थे । आप वर्षो तक आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्र. सभा देहली के कार्यकर्त्ता प्रधान रहें ।

महाप्रयाण –

Sound mind in a sound body (बलवान शरीर में बलवान आत्मा) यह उक्ति आप पर अक्षरशः चरितार्थ होती है । भीमकाय स्वतन्त्रानन्द इतिहास में वर्णित हनुमान, भीष्म, दयानन्द सरीखे ब्रह्मचारियों की कडी में से एक थे । दि. १३-४-१९५५ को बम्बई में आप निर्वाण को प्राप्त हुए । हम सब आर्यजन स्वामीजी के पदचिह्नोंपर चलने का प्रयास करें ।

श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी, परली-वै.

आर्य समाज परली द्वारा संचालित श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी में सम्प्रति नई-नई आयुर्वेदिक औषधियां बनाई गयी हैं । हाल ही में आयुर्वेद के विशेषज्ञों द्वारा त्रिफला चूर्ण, अविपत्तिकर चूर्ण, लवणभास्कर चूर्ण, सितोपलादिचूर्ण स्वादिष्टचूर्ण, च्यवनप्राश, आयुर्वेदिक चाय, ब्राह्मीआंवला तेल, आंवला कैन्डी, गोतीर्थासव आदि औषधियाँ बनाई गयी है । अतः सभी आयुर्वेद प्रेमी बंधुओं से निवेदन हैं कि वे शीघ्र ही गुरूकुल फार्मेसी से सम्पर्क कर इन बहुगुणी औषधियों को खरीदकर स्वास्थ्य लाभ उठावें तथा अन्यों को भी प्रेरित करें । संपर्क – विलास बनसोडे ९०११६०४६११

thearyasamaj.org

मानव के रूप में जन्में है, तो मानव ही बनें।

–डॉ. ब्रह्ममुनि (प्रधान, महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा)

संसार में जन्म लेनेवाला प्रत्येक मानव किसी जाति या मत–पन्थ का नहीं होता। सभी मानव एक समान ही होते हैं, किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं हैं। जन्मतः सभी के शारीरिक अन्तर्बाह्य अवयव भी एक जैसे ही ! थोडा बहुत व्यंग्यत्व अपवादरूप ही होता है। शास्त्रों में जाति शब्द के बारे में कहा है – **समानप्रसवात्मिका जातिः ।** अर्थात् भिन्न भिन्न वस्तुओं में समानता उत्पन्न करनेवाली जाति होती है। इस दृष्टि से हम सभी मानवों की एक ही जाति होगी। जन्म लेनेवाले सभी बच्चों में यही समानता पायी जाती है। दुर्भाग्य से परमात्मा की इस व्यवस्था में आज का संकीर्ण मानव उन बच्चों को हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, जैन, सिख आदि पन्थों में विभाजित कर रहा है। वह यहां तक ही नहीं रूकता। इससे भी आगे जाकर वह बम्मण, जाट, मराठा, लिंगायत, यादव, चमार, दलित, ओ.बी.सी. आदि अनेकों जातियों में विभाजित करता है। हमारे ही देश में आज इन मनुष्यकृत जातियों की संख्या लगभग ६५०० से अधिक है। आरक्षण जैसे दुश्चक्र ने तो जातियों की संख्या में अधिक ही बढोतरी की है।

परमात्मा की श्रेष्ठ कृति कहलानेवाले मानव को तोडने की शुरूवात ही यहां से होती हैं। आजकल का पढा लिखा मानवसमाज यह भी सोचने के लिये तैयार नहीं है कि निसर्ग में विद्यमान सूर्य, चंद्र, वायु, मिट्टी, पानी, आकाश आदि सभी तत्व समग्र विश्व के लिये समान रूप में हैं। वे कभी भी किसी पर अन्याय या भेदभाव नहीं करते। नदियां, पेड–पौधे, अन्न, धान्य, फल–सब्जियां आदि सभी के लिए खुली हैं। ये व इनसे निर्मित सभी पदार्थों का उपभोग सभी लोग समान रूप से करते हैं। इतना ही नहीं, बल्कि समग्र ज्ञान – विज्ञान भी सब के लिए है। इन्हे पाने का अधिकार सभी को है। नये युग के आधुनिक तकनिकी ज्ञान–विज्ञान ने भी यह सिद्ध कर दिखलाया है कि उसके सभी संसाधन विभिन्न वाहन, मशिनरी, टेलिफोन, मोबाईल, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि विश्व के मानवमात्र के लिये खुले हैं। यहां पर इनके इस्तेमाल में किसी प्रकार की जाति या सम्प्रदाय के लिये भेदभाव नहीं होता है। अनादिकाल से प्रवाहित परमात्मा की अमरवाणी वेद ज्ञान की सरिता को भी ग्रहण करने का अधिकार प्राप्त है।

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।

फिर परमात्मा की इस सृष्टिव्यवस्था में भेदभावों की संकीर्णता क्यों ? धर्म के नाम पर साम्प्रदायिक झगडे किसलिए ? जाति या वर्गों में क्योंकर आपसी संघर्ष ? इतना ही नहीं, इन्हीं मत–सम्प्रदाय में भी और जाति–उपजातियों का अन्दरूनी कलह

thearyasamaj.org

क्यों ? देश-विदेशों में दिन-प्रतिदिन बढते साम्प्रदायिक आतंकवाद ने मानव को कहां लाकर खडा किया हैं ? एक दूसरों के खून के प्यासे बनें इन लोगों ने एक तरह से विनाशलीला ही आरम्भ कर दी है। भेदभाव भी तभी माना जाता, जब ईश्वर ने जन्म से ही कुछ अलग चिन्हविशेष बनाये होते। जन्म लेते ही शिशुओं के शरीर पर कहीं पर किसी प्रकार की जाति या मजहबों के निशान लगाये नहीं होते। बच्चों पर इस तरह का कोई ठप्पा तक नहीं रहता। इन वास्तविक बातों को सभी जानते हैं, फिर भी इस प्रकार की दुर्बुद्धि क्यों ? सभी बच्चों के शरीरावयव जहां के वहीं होते हैं, आन्तरिक रचना भी एकसमान ही ! खून भी एक जैसा ही होता है, भोजन करने पर सप्तधातुओं का बनना भी एकसमान, एक जैसा ही होता है। सत्व, रज, तम इन त्रिदोषों व मन, बुद्धि, चित्त के स्वरूप भी एक जैसे ही। आत्माएं तो सभी एकसरीखी होती है।

इतना सबकुछ होनेपर भी व इन्हें जान लेनेपर भी मानव में बडी मात्रा में जन्मगत जातिप्रथा व मत-पन्थों की संकीर्णता कूट-कूट कर भरी हुई दिखाई देती है। आज भी इसमें बढोतरी हो रही है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि मत-पन्थों की कट्टरता के साथ ही उनकी विभिन्न जातियों में कलह भी बढते जा रहे हैं। जाति पंचायतें अपनी जातियों के लोगों के लिए रोज नया फतवा जारी कर एक दृष्टी से समाज में विघटन पैदा कर रही हैं। इससे देश के एकता व अखण्डता धोखें में है।

एक ओर विश्वस्तर पर मुसलमान अपने मजहब को फैलाने के लिए अपनी आतंकी गतिविधियां बढा रहा है, तो दूसरी ओर ख्रिश्चन मिशनरी सेवा सुश्रूषा के नाम पर भोली भाली गरीब या दलित जनता को ईसाई बना रही हैं। इसी में अब जब से मोदी सरकार केन्द्र में सत्तासीन हुई तब से रा.स्व.सं., वि.हिं.प., बजरंग दल आदि हिन्दू संगठन भी **'घर वापसी'** का नारा देकर भारत को **हिन्दू राष्ट्र** बनाने का उदघोष कर रहे हैं। यह सब मानवता के विरूद्ध हो रहा है। जब हमारा जन्म ही मानव जाति के रूप में हुआ है, तब ये मत-पन्थ (मजहब), जाति, वर्णभेदों की दीवारें किसलिए ? शान्ति व सहिष्णुता के पक्षधर विवेकशील मनुष्यों को उपरोक्त कट्टर साम्प्रदायिक व संकीर्ण जातिवादी मण्डली से सावधान रहना चाहिए। आनेवाली पीढी को अधिक जागरूक होना है। वेदादि आर्ष ग्रन्थों में प्रतिपादित मानवीय मूल्यों व सृष्टि व्यवस्था के समान नियमों को आत्मसात कर हमें श्रेष्ठ मानव बनने के लिए तत्पर रहना पडेगा। तभी सही अर्थों मे सारे विश्व में शाश्वत सुख व शान्ति की गंगा बहेगी। वेदों ने मानव को केवल मानव बनने व आदर्श दिव्य प्रजा निर्माण करणे का आदेश दिया हैं -

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।

आइये ! हम सब श्रेष्ठ मानव बनने का संकल्प करे और वेदमार्ग पर चलते रहें।

●●●●●

thearyasamaj.org

गणतन्त्रदिवस पर विशेष..

मेरे वतन !

रचयिता
प्र. प्रशांतकुमार
शास्त्री

मेरे वतन, मेरे वतन !
मेरे वतन, मेरे वतन !!
तेरे लिए तो जिन्दगी क्या
मौत भी है अर्पण !
मेरे वतन मेरे वतन !!

गर उठाये उँगली कोई
तोड देंगें हाथ हम ।
बुरी नजर से देखे कोई
फोड देंगें आँख हम ।।
द्रोह का क्या दम भरे कोई
उसकी लेंगें जान हम ।
तुझ पे कोई आँच न आये
ये आरजू है, मेरे वतन ।।१।।

धर्म मजहब पन्थ सारे
तेरे लिए तो एक हैं ।
हर प्रान्त – भाषा के हृदय में
तेरी ही जयघोष है ।।
इतिहास साक्षी है हमारा
हममें प्रलय का जोश है ।
तेरे लिए तो चट्टानों से
टकराने को करता मन ।।२।।
मेरे वतन....

– महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा का प्रधानमन्त्रीजी को पत्र –

नशीलें पदार्थों पर देश में पूर्ण पाबन्दी हो !

मा.श्री प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी........सादर नमस्ते !

आज इस देश में नशीले पदार्थों की प्राप्ति सहज उपलब्ध होने से हमारे युवक व्यसनाधीन हो रहे हैं । परिणामस्वरूप प्रौढ समाज तो प्रायः बिगडा ही है, परन्तु यवावर्ग भी अधिक मात्रा में व्यसनाधीन होते जा रहा है । और तो और यह दुर्गति अति वेग से बढ रही हैं । यह हम सभी भारतवासी बडे दुःख के साथ देख रहे हैं । इस कारण राजा का कर्तव्य बनता है कि प्रजा के इस दुःख का निवारण करें । आपसे प्रार्थना यह है कि भारत में नशीले पदार्थों पर संपूर्ण पाबंदी हो । भारत के युवकों का भविष्य, जो युवक सारे संसार में अधिक संख्या में इसी देश में है, वे सभी आपके आधीन हैं । महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों को आप कार्यान्वित कर सकते हैं । वे कहते हैं कि 'कोई भी राष्ट्र क्यों न हो, उसकी पहचान तो चरित्रवान् (मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम और योगेश्वर कृष्ण के समान) नागरिकों से ही होती है ।' इससे हमारे युवक कार्यक्षम स्वस्थ, विद्वान, बुद्धिमान, बलवान और राष्ट्र के आधारस्तम्भ बनें । हम आशा करते हैं कि आप इस विषय को प्राथमिकता देकर शीघ्र ही इसे कार्यान्वित करेंगे ! धन्यवाद !

प्रेषक–डॉ. ब्रह्ममुनि (प्रधान), माधव के. देशपांडे (मंत्री), उग्रसेन राठौर(कोषाध्यक्ष) एवं समस्त पदाधिकारी गण, महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा, परली–वै.

thearyasamaj.org

शोक समाचार

नासिक की ३ आर्य कार्यकर्त्रियों का देहावसान

आर्य समाज, पंचवटी नासिक की निम्नलिखित ३ समाजसेवी आर्य कार्यकर्त्रियों का हाल ही मे भिन्न-भिन्न तिथियों में निधन हो गया ।

१) श्रीमती अनिलादेवी आर्य -

आर्य समाज, पंचवटी की संरक्षिका एवं कर्मठ आर्य कार्यकर्त्री श्रीमती अनिलादेवी ज्ञानेन्द्रजी आर्य का दि. १८ नवम्बर २०१४ को ९४ वर्ष की दीर्घायु में वृद्धावस्था से दुःखद निधन हुआ ।

वे इस आर्य समाज की संस्थापक सदस्यों में एक थी । आपने वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार कार्य में बढचढ कर भाग लिया । हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम में सम्मिलित उनके पतिदेव श्री ज्ञानेन्द्रजी आर्य के साथ रहकर आपने राष्ट्रसेवा यज्ञ में भारी योगदान दिया है महर्षि दयानन्द की विशुद्ध वैदिक विचारधारा को उन्होंने पूरी निष्ठा के साथ जीवन में उतारा था ।

२)श्रीमती कैलाशराणी कपूर -

पंचवटी परिसर में तथा नासिक जिले में आर्य कवयित्री व भजन गायिका के रूप में प्रसिद्ध आर्य कार्यकर्त्री श्रीमती कैलाशराणी भगवन्तसिंहजी कपूर का गत दि.१९ दिसम्बर २०१४ को प्रातः ४ बजे वृद्धापकाल से दुःखद निधन हुआ । उनकी आयु ८४ वर्ष की थी । अपने दिवंगत पति मुनि श्री भगवन्तसिंहजी कपूर को आपने उनके वेदप्रचार आदि कार्यों में सोत्साह सहयोग दिया । एक कुशल कवयित्री, लेखिका व भजनगायिका के रूप में आपकी ख्याति थी । आपके द्वारा आर्य भजनों की संग्रहित **बिखरे मोतियों की माला** यह पुस्तक सर्वत्र प्रसिद्ध है । आर्य समाज पंचवटी की आप अन्ततक सदस्य रही है ।

३) श्रीमती शशिदेवी कपूर -

इसी संस्था की संस्थापक सदस्या श्रीमती शशिदेवी वीरेन्द्रजी कपूर का दि. १९ दिसम्बर २०१४ को प्रातः ९ बजे पुणे में अपने दामाद के घर वृद्धावस्था से देहावसान हुआ । वे ९० वर्ष की थी । आर्य समाज पंचवटी के नवनिर्माण तथा गतिविधियों के संवर्धन में आपका पूर्ण सहयोग था । साप्ताहिक सत्संगों सभा सम्मेलनों तथा यज्ञादि कार्यक्रमों के अवसर पर आप मधुर स्वर में भजन गाती थी ।

अपने पतिदेव के निधन के बाद वे अपनी पुणे स्थित कन्या के पास रहती थी

उपरोक्त तीन वयोवृद्ध, प्रखर आर्य सिद्धान्तानिष्ठ माताओं के परलोक सिधारने से पंचवटी नासिक के आर्य समाज की अपूरणीय क्षति हुई है । इनपर पूर्ण वैदिक रीति अन्तिम संस्कार किये गये । प्रधान श्री गुलशन कुमार चड्ढा , मंत्री श्री सुरेन्द्रकुमार वर्मा, उपप्रधान श्रीमती डॉ. रोचना भारती, उपमंत्री श्री तुषार वेलानी , कोषाध्यक्ष श्रीमती सरिता नारंग तथा अन्य पदाधिकारियों ने मिलकर यह संस्कार किये ।

दिवंगत आत्माओं को सभा द्वारा श्रद्धांजलि

thearyasamaj.org

श्रीमती पुष्पाबाई लड्डा का निधन

परतूर के प्रतिष्ठित व्यापारी एवं वैदिक धर्मप्रेमी श्री प्रदीपकुमारजी लड्डा की माताजी श्रीमती पुष्पाबाई श्रीवल्लभजी लड्डा का हाल ही में निधन हो गया। उनके पश्चात २ पुत्र, कन्याएं, बहुएं, पौत्र-पौत्रियां विद्यमान हैं।

श्रीमती पुष्पाबाई के पार्थिव पर दूसरे दिन दोपहर २ बजे पूर्ण वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किये गये। परली के पूर्वनगराध्यक्ष श्री जुगलकिशोर लोहिया एवं उदय ट्रान्सपोर्ट के श्री भंडारीजी के प्रयत्नों से सर्वश्री तानाजी शास्त्री, डॉ.नयनकुमार आचार्य, प्रा.नरेश शास्त्री, श्यामसुंदर आर्य, अमृतमुनिजी आदियों ने यह संस्कार किया

समाचार दर्पण सोलापुर में डी.ए.वी.का अमृतमहोत्सव

महाराष्ट्र के ऐतिहासिक सोलापुर शहर में आज से ७५ वर्ष पूर्व संस्थापित डी.ए.वी.शिक्षा संस्थान का **अमृतमहोत्सव** आगामी ५ फरवरी २०१५ को बडे उत्साह के साथ मनाया जा रहा है।

इस उपलक्ष्य में छात्रप्रतियोगिताएँ, प्रबोधनपूरक व्याख्यान, ७५ कुण्डीय बृहद्यज्ञ आदि विविध कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है। अनेंको प्रतिष्ठित विद्वानों व नागरिकों की उपस्थिति में प्रातः ९ बजे डी.ए.वी. परिसर में होनेवाले मुख्य समारोह की अध्यक्षता डी.ए.वी. मैनेजिंग कमिटी (दिल्ली) के चैअरमन श्री पूनमजी सूरी करेंगें। ७५ कुण्डीय यज्ञ में दिल्ली से आमन्त्रित वैदिक विद्वानों के साथही स्थानिक आर्य समाज के विद्वान पुरोहित पं. राजवीरजी शास्त्री पौरोहित्य करेंगें। श्रद्धानन्द गुरूकुल के ब्रह्मचारी वेदपाठ करेंगें। अतः इस विशाल समारोह में अधिक से अधिक संख्या में पधारने का आवाहन सोलापुर डी.ए.वी. कमिटी के सचिव डॉ.पी.के.शर्मा व अन्य पदाधिकारियों ने किया हैं।

आर्य समाज परभणी का निर्वाचन

परभणी स्थित आर्य समाज की त्रैवार्षिक बैठक हाल ही में सम्पन्न हुई, जिसमें आगामी तीन वर्ष के लिए निम्नलिखित कार्यकारिणी का गठन किया

प्रधान - श्री विजयकुमार अग्रवाल(गुप्ता)
उपप्रधान- श्री बाबुराव आर्य व
श्री विलास पाटील
मन्त्री- डॉ.श्री धनंजय औंढेकर
उपमन्त्री- श्री दिगम्बर देवकते व
श्री मधुकर पांचाळ
कोषाध्यक्ष- श्री बालकिशन बिर्ला
वेदप्र.अधिष्ठाता - डॉ. शिवाजी औंढेकर
आर्यवीर दल अधिष्ठाता-
रोहित राजेंद्र जगदाळे
व दयानंद बाबुराव आर्य
सभाप्रतिनिधि- डॉ. प्रकाश कदम,

thearyasamaj.org

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

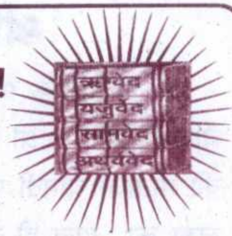

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

- मानवकल्याणकारी उपक्रम -

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद सन्देश — परमेश्वर जीवांमध्येही व्यापक

य आत्मनि तिष्ठन्नात्मनोऽन्तरो यमात्मा न वेद यस्यात्मा शरीरम् ।
आत्मानोऽन्तरो यमयति स त आत्मान्तर्याम्यमृतः ॥

(हे मैत्रेयी !) परमेश्वर आत्म्यामध्ये म्हणजे जीवामध्ये स्थित आहे आणि जीवात्म्याहून भिन्न आहे. पण मूढ जीवात्मा हे जाणत नाही की तो परमात्मा माझ्यामध्येच व्यापक आहे. ज्या परमेश्वराचे शरीर जीव हेच आहे, म्हणजे ज्याप्रमाणे शरीरात जीव राहतो, त्याचप्रमाणे जीवांमध्ये परमेश्वर व्यापक असतो. जीवात्म्याहून भिन्न राहून जो जीवाच्या पाप - पुण्यांचा साक्षीदार बनतो व जीवांना त्यांच्या कर्मानुसार फळे देऊन त्यांचे नियमन करतो. तोच अविनाशी परमात्मा तुझाही अन्तर्यामी आत्मा आहे. म्हणजे तुझ्यामध्ये भरून राहिला आहे. त्याला तू जाण.

(बृहदारण्यक उपनिषद-१४/६/७/३२)

दयानंदांची अमृतवाणी

जगाची उत्पत्ती

जगाची उत्पत्ती होऊन एक अब्ज, सत्याणव कोटी, कांही लाख व अनेक हजार वर्षे झाली आहेत. जगाची उत्पत्ती व वेदांची निर्मिती यांसंबंधी सविस्तर विवेचन 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' या माझ्या ग्रंथात वेदोत्पत्तीविषयक प्रकरणामध्ये मी केले आहे. ते पाहावे. ती सृष्टी परमाणूंपासून बनली आहे. ज्याचे विभाजन होऊ शकत नाही, अशा सर्वात अधिक सूक्ष्म कणाला परमाणू असे म्हणतात. साठ परमाणूंचा एक अणू बनतो. दोन अणूंचा एक द्व्यणुक बनतो. यालाच स्थूलवायू असे म्हणतात. तीन द्व्यणुकांचा त्रसरेणु बनतो. यालाच अग्नी म्हणतात. चार द्व्यणुक एकत्र आले की जल बनते. पाच द्व्यणुक एकत्र आले असता पृथ्वी बनते. तीन द्व्यणुकांचा त्रसरेणू व त्याची दुप्पट झाल्याचे पृथ्वी आदी दृश्य पदार्थ बनतात. अशा प्रकारे क्रमाने मिश्रण करून परमेश्वराने हे भूगोल आदी बनविले आहेत.

(सत्यार्थ प्रकाश - आठवा समुल्लास)

thearyasamaj.org

सुभाषित रसास्वादः

- वैराग्यातच खरी निर्भयता -

भोगे रोगभयं कुले च्युतिभयं वित्ते नृपालाद्भयम् ।
मौने दैन्यभयं बले रिपुभयं रूपे जराया भयम् ।
शास्त्रे वादभयं गुणे खलभयं काये कृतान्ताद्भयम्
सर्वं वस्तु भयान्वितं भुवि नृणां वैराग्यमेवाभयम् ॥

अर्थः- भोगांस रोगांचे, मोठ्या कुलास पतनाचे, द्रव्यास राजाचे, मनास दारिद्र्याचे, बलास शत्रूचे, रूपास स्त्रीचे, शास्त्रांस वादाचे, गुणांस दुष्टाचे आणि शरीरास मृत्यूचे भय आहे, अशा तऱ्हेने या पृथ्वीवर जितक्या वस्तू आहेत, त्या सर्वांस भय आहे. त्यात निर्भय असे एक वैराग्य मात्र आहे.

(भर्तृहरिविरचित वैराग्यशतक - २९)

काव्यकुंज

कर्माला लागू दे पुरूषार्थाची धार !

–गोपीनाथ शिवपुरकर

किती मेले हिरोशिमा, किती मेले नागासाकी,
राजधर्म विटंबून पुरूषार्थ मागे बाकी ।।
उद्योगपती धनवंत अमेरिका बलवंत
त्याचे सामर्थ्य लोपले पुरूषार्थ दाखल्यात ।।
स्वर्गाच्या सुखासाठी जिहादी हे वेडे किती
अहिंसेचे मारेकरी सांग मना कसे सुखी ।।
देवाजीच्या राज्यावर कब्जा माझा अवैदिक
सुख- दुःखाचे हे माझ्या असे का हे खरे माप ।।
खरे सुख खरे दुःख त्याची ओळख का धन
कर्म चांगले वोखटे पुरूषार्थ त्याची खुण ।।
सुख दुःखाचे औषध खरे सारे पुरूषार्थ
ते स्वार्थ भजनी दंगले रूढीधर्म कर्दमात...।।
संचित असंचिताचे दुःख सुख विसरून
माझ्या पुरूषार्था धार येथे लावतो बसून ।।

–भवानी नगर, औराद (शहा.)
मो. ९०४९१८७९४०

thearyasamaj.org

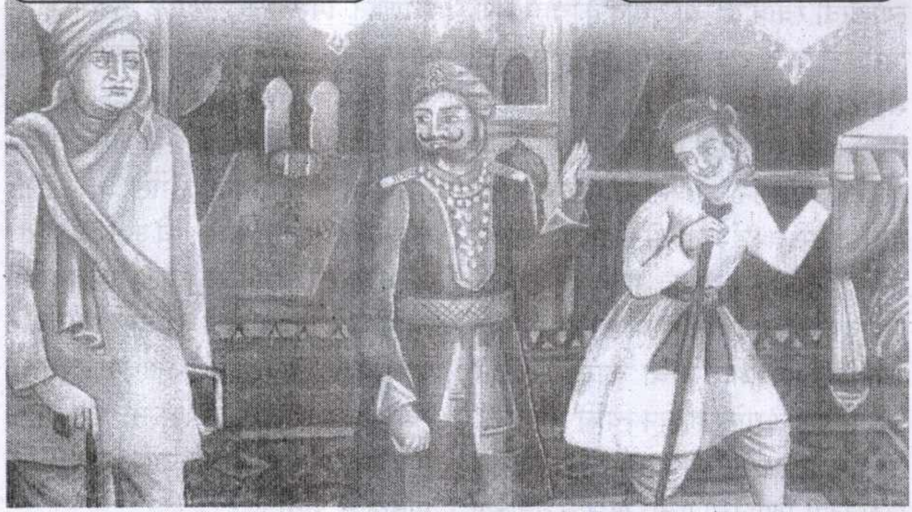

जोधपुरकडे प्रस्थान व अनिष्टाकडे वाटचाल

-डॉ. भवानीलाल भारतीय

शाहपूर येथे राहत असतांनाच स्वामीजींना जोधपुरला येण्याचे निमंत्रण तेथील राजे जसवंतसिंह व त्यांचे लहान बंधू राजे प्रतापसिंह यांनी पाठविले होते. त्यानुसार स्वामीजी दि. ३१ मे १८८३ रोजी जोधपूरला आले. फैजुल्लाखान यांच्या बागेत त्यांच्या राहाण्याची व्यवस्था करण्यात आली. महाराणा जसवंतसिंह हे अनेक दुर्व्यसनांमध्ये फसले होते. त्यांना सल्ला देणाऱ्या मित्रमंडळींमध्ये हुजरेगिरी करणारे व कटकारस्थान रचणारे लोक मोठ्या प्रमाणांवर होते. यांतील राजे प्रतापसिंह किंवा रावराजे तेजसिंह यांसारखी कांही मंडळी स्वामीजींचा उपदेश गांभीर्याने ग्रहण करीत असली तरी स्वतः महाराजे जसवंतसिंह हे मात्र या उपदेशकार्यात विशेष अभिरूची बाळगत नसत. परिणामी तेथे राहत असतांनाच कांही द्वेष्ट्या लोकांनी असे एक षडयंत्र रचले की ज्यामुळे स्वामीजींना आपले प्राण गमवावे लागले. या अनिष्ट कार्यात ती दुष्ट मंडळी यशस्वी झाली. स्वामी दयानंद हे क्षत्रियलोक व त्यातल्या त्यात राजें मंडळींना वाईट मार्गापासून परावृत्त करीत होते. आपल्या राण्यांना (पत्नींना) सोडून परस्त्रियांना रखेल म्हणून ठेवणे, दारू पिणे, शिकार करणे इत्यादीं सारख्या वाईट व्यसनांमध्ये आपली शक्ती व वेळ खर्च करण्याच्या बाबतीत स्वामीजीं तीव्र विरोधी होते. स्वामीजींच्या या कडवट भासणाऱ्या पण पूर्णपणे हितकारक असलेल्या गोष्टी लोकांना आवडल्या नाहीत. तेंव्हा त्यांनी त्यांची जीवनयात्रा संपविण्याचा बेत आखला. स्वामीजींचे प्राण हरण करू इच्छिणाऱ्या

thearyasamaj.org

या दुष्टांनी स्वयंपाक्याला हाताशी धरून त्याकरवी स्वामीजींच्या दुधात काचाचे चूर्ण मिसळले व ते दूध पिण्यास दिले. **आपले शरीर हे नश्वर आहे,** या अटळ सिद्धांताला पूर्ण मान्यता देणाऱ्या दयानंदांना मृत्यूला आलिंगन देणे जसे स्वाभाविक वाटत होते, तसेच ईश्वराची आज्ञा पाळत कर्तव्यमार्गावरून चालत राहणे, हे देखील ! त्यातच दुर्दैवाची गोष्ट अशी की स्वामीजींच्या आरोग्याची काळजी घेणारे डॉ. सूरजमल यांना हटवून त्यांचे जागी डॉ. अलीमर्दान खान यांच्यावर चिकित्सेची जबाबदारी सोपविली गेली. या नीच वृत्तीच्या डॉक्टरने षड्यंत्र रचणाऱ्या लोकांशी हातमिळवणी केली आणि त्याने औषधात कॅलोमल नावाचा विघातक पदार्थ थोड्याशा प्रमाणात मिसळला, यामुळे स्वामीजींची जगण्याची आशा जवळजवळ संपलीच जवळपास दोन आठवड्याच्या या अभूतपूर्व विषप्रयोगामुळे क्षीण झालेल्या शरीरप्रकृतीने स्वामीजी आबू पर्वतावर गेले. तेथून डॉ. लक्ष्मणदासचा सल्ला घेऊन ते २७ ऑक्टोबरला अजमेरला आले. भक्तजनांनी त्यांना भिनायचे राजे यांच्या वाड्यात थांबविले. भक्त डॉ. लक्ष्मणदासांनी त्यांच्यावर उपचार सुरू केले, पण आता मात्र त्यांच्या जगण्याची आशा जवळपास मावळीच होती.

('दयानंद चित्रावली'चा मराठी अनुवाद)

-३/५, शंकर कॉलनी, श्रीगंगानगर (राज.)

ग्रंथ समीक्षा

विज्ञान व अध्यात्माचा सुरेख संगम

(ग्रंथ-गाथा आत्मशोधाची/ले.डॉ.ओमप्रकाश राठौर)

समीक्षक- प्रा.देवदत्त तुंगार

सुश्री कुंअरदेवी आणि श्यामलालजी राठौर हे नांदेडचे प्रसिद्ध आर्य समाजी दाम्पत्य होते. सामाजिक व शैक्षणिक क्षेत्रात त्यांनी भरीव कामगिरी केली. त्यांचे सुपुत्र ओमप्रकाश राठौर हे ख्यातनाम हिंदी कवी आणि लब्धप्रतिष्ठित विज्ञान-लेखक आहेत. त्यांनी यापूर्वी **माझा अस्तित्वबोध** हा विज्ञान आणि अध्यात्म यावरील ग्रंथ लिहिला असून त्याच्या प्रकाशनाच्या वेळी या विषयावर त्यांनी अधिक प्रकाश टाकणारे लेखन करावे, असे डॉ. यु.म.पठाण व इतर अधिकारी व्यक्तींनी सुचविले होते. **माझा अस्तिबोध** मधील विवेचनाचे अधिक विस्तृत व परिपूर्ण विश्लेषण **'गाथा आत्मशोधाची'** या ग्रंथात केलेले दिसते.

कोऽहम् सोऽहम्

प्रत्येक माणूस स्वतःच्या अस्तित्वाबद्दल, विश्वरचनेबद्दल व सृष्टीच्या कौतुकाबद्दल विचार करीतच असतो. यासंबंधी वैदिक वाङमयात सुंदर संवाद आहेत नवजात अर्भक विचारते- **मी कोण आहे ?** त्यावर उत्तर मिळते - **तू तो आहेस ?** तो म्हणजे चैतन्य, महाचैतन्य

thearyasamaj.org

होय. म्हणजेच **तू कोण आहेस?** याचे उत्तर – **तू त्या ईश्वराचा महाचैतन्याचा अंश आहेस,** हे आहे.

डॉ. ओमप्रकाश राठौर यांनी प्रस्तुत ग्रंथात वैदिक साहित्य आणि पाश्चात्य वैज्ञानिक यांच्या **विज्ञान आणि अध्यात्म** या संबंधीचा तुलनात्मक व चिकित्सक अभ्यास सादर केला आहे. शंकराचार्य व इतर मान्यवरांनी अद्वैतवाद पुरस्कारिला व भारतीय तत्वज्ञान म्हणजे अद्वैत सिद्धांत अशी प्रचलित धारणा आहे. परंतु आर्य समाजाचे संस्थापक या युगाचे श्रेष्ठ तत्वचिंतक महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वती (इ.स. १८४४-१८८३) यांनी वेदप्रतिपादित **त्रैतवाद** हाच भारतीय तत्वज्ञानाचा आधारस्तंभ आहे, असे सिद्ध केले आहे. त्रैतवाद म्हणजे ईश्वर, जीव आणि प्रकृती (म्हणजे निसर्ग) या तीन सनातन स्वतंत्र सत्ता आहेत. आत्मा, परमात्मा एक नव्हे, ईश्वर आणि जीवात्मा **एक** नाहीत. हा त्रैतवादाचा विचार सामान्य माणसाच्या गळी उतरणे अवघड असले तरी तेच तर्कसंगत आहे.

हे विश्व कसे व का निर्माण झाले ? त्याच्या रचनेमागे कांही उद्दिष्ट आहे का ? मानवाची उत्क्रांती कशी झाली ? इतिहासाच्या क्रमाने क्रमशः मानव उत्क्रांत होत गेला का ? इत्यादीसंबंधी ज्ञानसाधनेचे उपासक महर्षी दयानंद सरस्वती, न्यूटन, डार्विन, आईन्स्टाईन, मॅक्स प्लँक, ज्ञानेश्वर, तुकाराम आदी ऋषी- मुनी, वैज्ञानिक, संत, सुधारक यांनी मौलिक विचार मांडले आहेत. **शहाणे करून सोडावे सकळ जन,** हीच संतांची व वैज्ञानिकांची अंतरीची तळमळ असते. यादृष्टीनेच अस्तित्वबोध आणि आत्मशोध ही ज्ञानयात्रा शेकडो वर्षांपासून सुरू आहे. त्या यात्रेतील एक यात्रेकरू डॉ. राठौर यांनी सदर ग्रंथात स्वतःचे जे विचार व्यक्त केले आहेत, त्यासंबंधी विचारवंतांत मतभेद होऊ शकतात, असे मतभेद नोंदविले तर ते त्यांचेही स्वागतच करतील.

मराठवाड्यात दैनिक गोदातीर नांदेडचे मानद संपादक डॉ. रवींद्र रसाळ यांनी देवकणासंबंधी नवा सिद्धांत मांडला आहे. त्याची दखल डॉ. राठौर यांनी या ग्रंथात घेतली आहे. कलकत्ता येथील भारतीय विज्ञान काँग्रेसच्या अधिवेशनात डॉ. रसाळ यांनी **ईश्वरी कण- गॉड पार्टिकल** संबंधीचा सिद्धांत मांडला आहे.

या ग्रंथास नांदेडच्या स्वा.रा.ती.म. विद्यापीठाचे कुलगुरू डॉ. पंडित विद्यासागर यांची मर्मग्राही व आस्वादक प्रस्तावना लाभली आहे. डॉ. पंडित विद्यासागर हे कुलगुरू आहेत. त्याचबरोबर मराठीतील अग्रगण्य विज्ञान-लेखकही आहेत. त्यामुळे त्यांच्या प्रस्तानेस विशेष मोल आहे.

डॉ. राठौर यांच्या ज्ञानयात्रेतील प्रवासाला माझ्या अनेक शुभेच्छा !

●●●●●

-निरामय बंगला, कला मंदिरामागे,
नांदेड मो. ९३७२५४१७७७

thea1ryasamaj.org

पर्यावरण पोषक विज्ञाननिष्ठ -'वैदिक यज्ञ'

– माधव के. देशपांडे

सध्या साऱ्या भारतवर्षात पर्यावरण या विषयावर जिकडे तिकडे चर्चा ऐकू येत आहे. तीस वर्षापूर्वी पर्यावरण हा विषयही अनेकांना ज्ञात नव्हता, पण आजकाल तर या विषयावर सभासंमेलने सुद्धा आयोजित केले जात आहेत. अनेक शोधनिबंध यावर लिहिले जात आहेत. वाळवंटाचाही पर्यावरणीय अभ्यास पाहून परदेशीय तज्ज्ञ सुद्धा स्तिम्मित होत आहेत. केन्द्र शासनामध्ये यासाठी वेगळे मंत्रालय स्थापन झाले आहे. पर्यावरणावर बाधा येऊ शकेल, अशा अनेक कृत्यांवर बंदी घालण्यात येत आहे. गेल्या २०-२५ वर्षातच असे काय घडले आहे की विश्वातील सारे वैज्ञानिक या विषयाकडे गंभीरपणे पाहत आहेत. काय मानवाच्या अस्तित्वालाच यामुळे धक्का बसण्याचा संभव आहे ? हे पर्यावरण संतुलन म्हणजे काय ? वैज्ञानिक याला कशा प्रकारे संबोधतात ? अशा पर्यावरणाविषयी प्राचीन वैदिक विज्ञान काय म्हणते ? त्याविषयी काही माहिती आहे काय ? हे पाहणे जसे अगत्याचे आहे, तसेच त्या विषयीचा अभ्यास करणे पण इष्ट आहे.

पर्यावरण म्हणजे काय ?

पर्यावरणाची सोपी व्याख्या अशी करता येईल. आम्ही ज्या ठिकाणी राहतो व वावरतो, त्याच्या आजूबाजूला वायू, जल आणि भूमी यांचे जे आवरण आहे, तेच पर्यावरण आहे. हे आम्हास प्रकृतीच्या माध्यमातून प्राप्त झाले आहे. पर्यावरणाची व्यापक व्याख्या अशी होऊ शकेल की ज्यामध्ये समस्त भौतिक आणि जैविक व्यवस्था असून त्यामध्ये प्राणी जन्म घेतात व आपल्या स्वाभाविक प्रवृत्तीचा विकास करतात, त्यास पर्यावरण म्हणावे.

पर्यावरणाचे स्थूल मानाने तीन विभाग पडतात- १) स्थलमंडल, २) जलमंडल व ३) वायुमंडल. या तीनही विभागाच्या नैसर्गिक संतुलनास पर्यावरण म्हणतात, तर असमतोल प्रदूषण म्हणतात. संतुलन म्हणजे या मंडलाची निहित तत्वांमध्ये विभागणी असणे. म्हणजेच पर्यावरण व या तीन तत्वांचे कमी जास्त होणे. हेच प्रदूषण होणे होय. या प्रदूषणाचे प्रमाण आज वेगाने वाढत आहे. यावर आळा घातला नाही, तर मानवी अस्तित्वालाच याचा धोका पोहोंचण्याची शक्यता आहे. हाच तो गंभीर इशारा आहे.

सद्यस्थिती–

विकसित तसेच विकसनशील

thearyasamaj.org

देशातील, वैज्ञानिक आविष्कारामुळे आम्ही लाखो टन कोळसा, डिझेल, पेट्रोल, क्रुड ऑईल, घासलेट यांच्या ज्वलनाचा दुर्गंधयुक्त वायू प्रवाहित करीत आहोत. लाखो कारखान्यांतून दुर्गन्धयुक्त धूर तसेच विषारी वायू व जल वातावरणात सोडण्यात येत आहे. अल्कोहोल च्या अक्षरशः नद्या वाहत आहे. रासायनिक पाऊस पडत आहे. यामुळे पृथ्वी, जल, वायू, वनस्पती, अन्न इत्यादी प्रदूषित तर होत आहेतच, पण याचा दुष्परिणाम म्हणजे आमचे वातावरण दूषित व विषयुक्त होत आहे. प्रदूषणाचे प्रमाण निरंतर आक्रमकरित्या वाढत असलेले दिसून येत आहे. प्रदूषणाचा ब्रह्मराक्षस आज भारतालाच नव्हे, तर समस्त विश्वाला ग्रास बनविण्याच्या पवित्र्यात उभा असलेला दिसत आहे. याउलट भौतिकवादी मानव प्रकृतीची उपेक्षा करित तथाकथित विकासाकडे प्रवृत्त होत आहे.

प्रदूषणाचे कारण-

श्रीमद्‌भगवद्‌गीतेतील तृतीय अध्यायाच्या बाराव्या श्लोकाचा अर्थ स्पष्ट करतांना स्वामी समर्पणानंद या समर्थ भाष्यकाराने म्हटले आहे की 'लोक कल्याणकारी भावनेने अथवा सर्व प्राणिमात्राच्या हितासाठी संगठित होऊन जे कार्य (पूजा) केले जाते, त्यालाच यज्ञ म्हणतात. त्यामुळेच देव अभीष्ट भोग प्रदान करतात. त्यांच्या या दानाच्या मोबदल्यामध्ये त्यांना (देवांना) काहीही न देता जे लोक केवळ भोग प्राप्त करतात, त्यांना दरोडेखोरच म्हणावे लागेल.' याठिकाणी देव म्हणजे जड व चेतन देवता होत. उदाहरणार्थ पृथ्वी देवतेविषयी विचार करू या ! धरतीमातेकडून आम्ही धान्य अर्थात अन्न घेतो. त्याऐवजी आम्ही धरतीस खताच्या रूपाने परतफेड करतो. अन्न, पीक काढल्यामुळे झालेल्या उणीवांची भरपाई करतो. म्हणूनच शेती करणे हे कार्य वेदामध्ये धर्म कार्य म्हणून गौरविले आहे. याउलट जे लोक या भूमीतून लाखो टन कोळसा, खनिज द्रव्ये काढून घेतात, पण त्याची भरपाई करीत नाहीत. जोपर्यंत या भूमीस पुन्हा कोळसा निर्माण करण्यायोग्य बनवत नाहीत, तोपर्यंत कोळसा काढणे ही दरोडेखोरीच होय. हे शब्द कटू आहेत, पण आज पर्यावरणाच्या संतुलनाच्या व्याख्येत व त्यामुळे निर्माण होणाऱ्या भयंकर आपत्तीचा विचार केल्यास हेच शब्द कटू वाटणार नाहीत. भौतिकवादी मानव प्रकृतीची उपेक्षा करून विकासाकडे वाटचाल करीत आहे. उद्या काय होईल ? याची काळजी न करता तो आपल्या पायावर कुऱ्हाड मारून घेत आहे. या महाभयंकर संकटाचे ताण्डवनृत्य पाहून राष्ट्रीय तसेच आंतरराष्ट्रीय जगामध्ये खळबळ माजली आहे. पर्यायाने पर्यावरणाची भाषा आता तालुका

thearyasamaj.org

पातळीवर सुद्धा ऐकू येत आहे. यासाठी शासकीय तसेच अशासकीय प्रयत्न अनेक पातळीवर करण्यात येत आहेत. परंतु या समस्येवर समुचित निदान होऊ शकले नाही. या विषम परिस्थितीची गुरूकिल्ली **वैदिक यज्ञ** आहे. वैदिक काळात यास इतके प्राधान्य होते की, वैदिक यज्ञाचा समावेश नित्य कर्मात करण्यात आला होता. पंचमहाभूतांपैकी पर्यावरणात तीन महाभूते पृथ्वी, आप व वायू याचाच समावेश आज वैज्ञानिक करीत आहेत. यात अग्नी व आकाश याचा विचारच केला जात नाही. अग्नीचा उपयोग वरील तीन भूतांचा समतोल राखण्यासाठी केला जाऊ शकतो. याचा विचार प्राचीन आर्य ऋषि महर्षींनी अभ्यासांती ठरविला होता.

महर्षि दयानंदाचे मत-

वैदिक यज्ञाविषयी म. दयानंद सरस्वती आपल्या प्रसिद्ध ग्रंथामध्ये म्हणतात- **होय ! वैदिक यज्ञ न केल्यास मानवास पाप लागते. कारण ज्या माणसाच्या शरीरापासून जेवढा दुर्गन्ध उत्पन्न होऊन हवा व पाणी दूषित होऊन रोगांच्या उत्पत्तीला कारणीभूत होतो, त्यामुळे प्राण्यांना दुःख पोचते, तेवढ्या प्रमाणात त्या माणसाला पाप लागते. म्हणून या पापाच्या निवारणार्थ तेवढा किंवा त्याहून अधिक सुगंध हवेत व पाण्यात पसरविला पाहिजे. एक माणूस जेवढे अन्न खातो, तूप खातो, तेवढ्याच तूपाच्या हवनाने लाखो लोकांना लाभ होतो, आरोग्य लाभते.** किती सूक्ष्म विचार आहेत. महर्षी पुढे म्हणतात- **जोपर्यंत वैदिक यज्ञाचा प्रचार व प्रसार चालू होता, तोपर्यंत आर्यावर्त देशात रोगाचे नाव नव्हते व तो सर्व सुखांनी परिपूर्ण होता. आता सुद्धा ही परिस्थिती प्राप्त होऊ शकेल, जर वैदिक यज्ञ पुन्हा प्रचलित झाला तर.....!**

वैदिक संदर्भ -

जगातील प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद होय. यातील प्रथम मंत्र आहे -

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारंरत्नधातमम् ।।

हेच लक्ष केंद्रीत करीत शतपथ ब्राह्मण (१-७-१-२) मध्ये म्हटले आहे- **यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म ।** तसेच **यज्ञो हि श्रेष्ठतमं कर्म ।।**

(तैतिरीय ब्राह्मण ३-२-१-४)

यज्ञ आणि घृताचे वैज्ञानिक गुण-

यज्ञाच्या हवीमध्ये प्रमुख स्थान घृताचे आहे. याला आज्यसुद्धा म्हणतात. आज्य म्हणजे **आ समन्तात् लोकान् जयते अनेन इति** अर्थात् याद्वारे लोक लोकान्तरातील प्रदूषणरूपी असुर तत्व तसेच तूफान, वादळ, यावर विजय प्राप्त

thearyasamaj.org

होतो. गायीच्या दूधापासून बनविलेल्या तुपामध्ये ही क्षमता आहे. हे तूप ज्वलनानंतर भयंकर विषाचे प्रतिरोधक बनते. यात भेदक शक्ती आहे. यामुळे वातावरणातील जल व वायुमध्ये मिसळलेल्या विषारी पदार्थाचे पृथक्करण होते व विषारी परमाणू नष्ट होतात. हे तूप त्याच्या सहस्त्र पटीने अधिक असलेल्या वायूचे सुद्धा प्रदूषण नष्ट करू शकते. यामध्ये पर्यावरण शोधक अतुलनीय शक्ती आहे.घृतास सर्पी सुद्धा म्हणतात. कारण जेव्हा हे तूप यज्ञाद्वारे अन्तरिक्षात मार्गक्रमण करते, तेव्हा याची गती सर्पाकार (नागमोडी) होते. त्यामुळे जास्तीत जास्त प्रमाणात घर्षण निर्माण होऊन शुद्धिकरणाची प्रक्रिया द्विगुणित होते.

यज्ञातील हवी-

यज्ञामध्ये चार प्रकारच्या हवी टाकण्यात येतात -

१) सुगंधित २) पुष्टिकारक
३) मिष्ट ४)रोगनाशक.

यात प्रामुख्याने कस्तुरी केशर, अगर, तगर, श्वेतचंदन, विलायची, जायफळ, जवित्री, दूध, फळ, कन्द, अन्न, तांदूळ, गहू, उडीद, मध, सोमलता इत्यादी औषधी व जडिबुटी याचा समावेश होतो. यांची विशेषता अशी आहे की, ज्वलनानंतर यांचे गुण सहस्त्रपटीने वाढतात. याचे परमाणू सूक्ष्मातिसूक्ष्म बनून विश्वातील प्रदूषण दूर करण्यास सहाय्यक व सक्षम बनतात.

हविर्विज्ञान-

गायीचे तूप जेव्हा तांदूळमिश्रीत करून मंत्रोच्चारासहित वैदिक यज्ञामध्ये अर्पण केले जाते, तेंव्हा याच्या ज्वलनक्रियेतून चार प्रकारचे वायू निर्माण होतात - १) एथिलीन ऑक्साइड २) प्रापीलीन ऑक्साइड ३) फॉर्मल्डीहाइड आणि ४) बीटा प्रॉपीयोलेक्ट्रोन! आहुतीनंतर तूपामध्ये ॲसिटीलीन उत्पन्न होतो. हे ॲसिटीलीन प्रखर उष्णतेसहित ऊर्जायुक्त असून प्रदूषित वायुस आकर्षून घेण्याची यात क्षमता आहे. या ठिकाणी रासायनिक प्रक्रिया होऊन विषयुक्त वायुचे शुद्धीकरण होते. शिवाय फॉर्मल्डीहाईड हा वायू रूग्णालयातील शस्त्रागारात (Operation Theatre) निर्जंतुकीकरणासाठी वापरतात. म्हणून मानवाने प्रातःकाळी व सायंकाळी प्रतिदिनी यज्ञ करावा. प्रातःकाळाचे हवन दिवसभराचे शुद्धिकरण करते, तर सायंकाळचे हवन रात्रीच्या वातावरणाचे शुद्धिकरण करून नैसर्गिक वातावरणीय समतोल राखण्यास उपयुक्त ठरते.

यज्ञीय मन्त्रामध्ये अग्नीस **अया** म्हटले आहे. अया म्हणजे गतिशीलता ! अर्थात साऱ्या ब्रह्माण्डात अग्नीचे सूक्ष्मतरंग निरंतर प्रवाहमान आहेत. (जगत् याचा

thearyasamaj.org

अर्थसुद्धा गतिशील असा होतो.) जी वस्तू स्थूल अग्नीमध्ये टाकली जाते, त्या वस्तूचे सहस्त्रपटीने विभाजन होऊन वायुरूपाने अन्तरिक्षात त्याचे सूक्ष्म परमाणू पोंचविले जातात. उदाहरणार्थ- समजा एक छोटीशी मिरची अग्नीत टाकली, तर त्याचा ठसका सहजपणे १०० माणसांना त्रास देऊ शकतो. याचे परमाणू हवेमध्ये सहस्त्रपटीने व अत्यंत वेगाने पसरतात. म्हणून अग्नीस दूत म्हटले आहे.

अग्निदूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।।
(सामवेद १-१)

वायुप्रदूषण निवारणक्रिया-१

यज्ञामध्ये हवन केलेले पदार्थ सुगन्धित, रोगनाशक आणि पुष्टिकारक असल्यामुळे व त्यामध्ये एकानंतर एक आहुती प्रदान करण्याच्या प्रक्रियेमुळे वातावरणात आहुतीपासून रूपांतरित वायूचे वातावरणातील वायूशी घर्षण होते यामुळे मार्जन (घर्षण) व शोधन (विघटन) क्रियांचे क्षेत्र विशाल व व्यापक होत जाते. यज्ञ समाप्तीनंतर तापमान हळुहळू कमी झाल्यामुळे हा वायुरूप हवी पुन्हाः पृथ्वीकडे येऊ लागतो पुन्हा घर्षणक्रिया होऊ लागते. रात्र व दिवस यांच्या तापमानातील फरकामुळे सुद्धा या क्रियेस चालना मिळते. यामुळेच प्रदूषणाचे शुद्धीकरण प्रतिदिनी होत असते. ही निसर्गनिर्मित प्रक्रिया वातावरणात विद्यमान आहेच. याची अनुभूति अगदी पहाटे (ब्रह्ममुहूर्ती - सूर्योदयापूर्वी दीड ते दोन तास) असलेल्या प्रसन्न, आल्हाददायक, शुद्ध, पवित्र व बलवर्धक वातावरणात येते. रक्तदाब, मधुमेह यासारखे दुर्धर आजार ज्यांच्या समवेत आहेत, अशांना हल्ली डॉक्टर सकाळी फिरावयास जाण्याचा सल्ला देतात. सकाळचे हे वातावरण रोगनाशक असून उत्साहवर्धक असते. कारण या वातावरणातील होणाऱ्या प्रक्रिया ! आपण थोडी कल्पना करू की ही नैसर्गिक प्रक्रिया जर वातावरणात नसती, तर काय झाले असते ? साऱ्या जगात प्रातःकाळीच सर्व प्राणी आपल्या शरीरातील दुर्गन्धीयुक्त घाण बाहेर टाकतात. तसेच वनस्पती वातावरणात वायूचे परिमाण (कार्बनडाय ऑक्साइड) व्यवस्थित राखण्यास मदत करतात. जर आम्ही आमची वने नष्ट केली, तर काय होईल ? **वृक्षवल्ली आम्हां सोयरी** म्हणणारे संत तुकाराम खरोखरच आकाशाएवढे वाटायला लागतात. असो.

वायुप्रदूषण निवारणक्रिया -२

या प्रक्रियेतून उत्पन्न वायुरूप पदार्थ वातावरणात शीघ्रतेने व्याप्त होतात. अन्तरिक्षातील ताप तसेच विद्युतरूपी अग्नी (वीज) आणि सूर्यकिरणांच्या

thearyasamaj.org

उष्णतेमुळे उत्पन्न तापमानातील तीव्रता, उग्रता यामुळे यज्ञरूपान्तरीत वायुरूप पदार्थ सतत वरवर जातात. तसेच न्यूनतेमुळे हे पृथ्वीकडे गतीने येतात. याप्रकारे क्रमशः खालीवर होण्याच्या प्रक्रियेमुळे घर्षण उत्पन्न होऊन प्रदूषण निवारण्याचे कार्य वेगाने घडून येते व याचा परिणाम म्हणजे **शन्नो वातः पवताम्** । सुखकारक वायुचे प्रवाह सुरू होतात.

वरील दोन्ही क्रिया **यज्ञात् भवति पर्जन्यः** । या उक्तीस सुद्धा लागू होतात. जलविज्ञान शास्त्र या विषयामध्ये आम्ही असे शिकलो की, पाऊस पडण्यासाठी आवश्यक असलेली एक परिस्थिती (Dynamic Cooling) आहे. तसेच पाऊस पाडण्याच्या प्रक्रियेस कारणीभूत होणारी क्रिया कन्व्हेक्टीव्ह आहे. यामध्ये वातावरणातील गरम व थंड होण्याची प्रक्रिया आवश्यक आहे. तसेच अरोग्राफीक प्रकारामध्ये पर्वत, शिखरे वायूस अशाप्रकारे अडवतात की हा वायू (ढग) खाली वर जाण्याची क्रिया वाढल्यामुळे पाऊस पडतो. याचे रेखाचित्र असे आहे (हा आकार घृतमिश्रीत सर्पीवायुचा आहे.)-

ध्वनिप्रदूषण निवारणः-

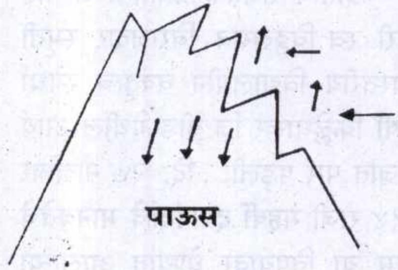

उपरोक्त चार प्रकारच्या पदार्थाच्या आहुत्यांमुळे पदार्थजन्य प्रदूषण तर दूर होतेच, परंतु ध्वनिप्रदुषणसुद्धा, आहुत्यां बरोबर करण्यात येणाऱ्या वेदमंत्रांच्या सस्वर उच्चारांमुळे दूर होते. वेदमंत्रांची संज्ञा पवित्र आहे. संगीत विद्येवर आधारित उच्चार आहेत. साम (गायन) मंत्र तर गाण्याचेच आहेत. ज्याप्रमाणे विकृत राग, क्रूर शब्द, शिव्याशाप, अपशब्द यामुळे अशान्ती वाढते, त्याचप्रमाणे उलट प्रक्रिया म्हणजे शांतिप्रद ध्वनिमुळे ध्वनिप्रदूषण दूर होऊन वातावरण शांत होते.आज ध्वनिप्रदूषण सुद्धा पराकोटीला पोहचल्याचे दिसून येते.

❀❀❀❀

(उर्वरित पुढील अंकात....)

-रो.हाऊस नं. ३, साई अव्हेन्यु,
पिंपळे सौदागर, पुणे -१७
मो. ९८२२२९५५४५

सूचना - आगामी जानेवारी २०१५ पासून वैदिक गर्जनेचे ग्राहकशुल्क पुढील प्रमाणे निश्चित झाले आहेत. तरी ग्राहक बनू इच्छिणाऱ्यांनी याची नोंद घ्यावी

अ) आजीवन - रू.१०००/-
ब) वार्षिक - रू. १०० /-

thearyasamaj.org

स्व. बिराजदार राज्य. विद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धेत कु. स्नेहल प्रथम, कु. वैष्णवी व आरती द्वितीय तर चि. दिनेश तृतीय

प्रांतीय सभेतर्फे प्रतिवर्षी घेण्यात येणारी स्व.विठ्ठलराव बिराजदार स्मृती राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा यावर्षी किल्लेधारूर जि.बीड येथील आर्य समाजात पार पडली. दि. २७ नोव्हेंबर २०१४ रोजी **महर्षी दयानंदांचे मानवतेचे विचार** या विषयावर घेण्यात आलेल्या या स्पर्धेचे अध्यक्षस्थान प्रधान श्री प्रमोदकुमार तिवारी यांनी भूषविले.

या स्पर्धेत माजलगांवच्या सिद्धेश्वर विद्यालयाची विद्यार्थिनी कु.स्नेहल राधाकृष्ण मुंडे हिने प्रथम येण्याचा मान मिळविला. स्थानिक सरस्वती माध्यमिक विद्यालयाची कु. वैष्णवी हरी उंदे व सिद्धेश्वरच्याच कु. आरती बाळकृष्ण कुलकर्णी या दोघींनी दुसऱ्या क्रमांकाचे बक्षीस पटकावले. तर स्थानिक हुतात्मा विद्यालयाचा विद्यार्थी चि. दिनेश उगले हा तृतीय आला. या सर्व यशस्वी वाक्पटूंना अनुक्रमे रू. १५००/- (प्रथम), रू. ११००/- (द्वितीय-विभागून) व रू. ७५१/-(तृतीय) व प्रत्येकी रू. १००/- ची ग्रंथसंपदा अशी पारितोषिके मान्यवरांच्या हस्ते प्रदान करण्यात आली. सहभागी सर्व स्पर्धकांना सभेच्या वतीने प्रमाणपत्रांचे वितरण करण्यात आले. स्पर्धेचे परीक्षण सर्वश्री बाबासाहेब थोरात, चंद्रकांत देशपांडे ॲड.पी.डी.मिश्रा यांनी केले. कार्यक्रमात सभेचे वेदप्रचार अधिष्ठात श्री लक्ष्मणराव आर्य व उपदेशक पं. सुधाकर शास्त्री यांनी मार्गदर्शन केले.

स्पर्धा सफल करण्यासाठी आर्य समाजाचे प्रधान श्री प्रमोदकुमार तिवारी, मंत्री श्री प्रमोद मिश्रा, सोमनाथअप्पा आर्य, काशिनाथ चिंचाळकर आदींनी परिश्रम घेतले.

नव्या आर्य समाजांची कार्यकारिणी

१) सारडगांव ता.परळी-वै.

प्रधान - श्री शिवदास आघाव
उपप्रधान- सौ. मीरादेवी भागवत आघाव
मंत्री- श्री भागवतराव ज्ञानोबा आघाव
उपमंत्री - श्री भगवान श्रीराम आघाव
कोषाध्यक्ष - श्री सुधाकर मानाजी दराडे
पुस्तकाध्यक्ष - श्री रामेश्वर भीमराव मुंडे
सभा प्रतिनिधी - भागवतराव आघाव

अंतरंग सदस्य -
सर्वश्री भीमराव महाराज, त्र्यंबक महाराज, प्रल्हाद महाराज, श्रीराम मुंडे, दत्तराव आघाव, रामकृष्ण गुट्टे, राम तांदळे, शिवाजी मुंडे आदी

२) मांडवा ता.परळी-वै.

प्रधान - श्री लक्ष्मण अंबाजी गुट्टे
उपप्रधान - ॲड. धनंजय पाटलोबा मुंडे
मंत्री- श्री पाटलोबा माधवराव मुंडे
उपमंत्री - श्री श्रीधर गुट्टे गुरूजी
कोषाध्यक्ष - श्री शिवदास नागरगोजे
वेदप्र. अधिष्ठाता-श्री श्रीहरी दत्तात्रय मुंडे

thearyasamaj.org

आर्यवीर दल अधिष्ठाता – दिगंबर ज्ञानोबा फड
संरक्षक – गंगाधर संभाजी कोटंबे
सदस्य – संग्राम पाटलोबा मुंडे
सौ. माधवी धनंजय मुंडे
श्री लिंबाजी महादू तिडके
श्री माणिक रघुनाथराव चाटे
श्री पाटलोबा दगडोबा साखरे
सौ. ज्ञानेश्वरी श्रीहरी मुंडे
सौ. इंदुमती शिवदास नागरगोजे
श्री. माधव यशवंत फड
श्री मारूती शंकर फड

शोक वार्ता

डॉ. हाजगुडे यांना पितृशोक

रामनगर (लातूर) येथील आर्य समाजाचे सदस्य व प्रसिद्ध अस्थिरोगतज्ञ डॉ.श्री गीतकुमारजी हाजगुडे यांचे वडील श्री अण्णाराव शंकरराव हाजगुडे यांचे दि. १९ डिसेंबर २०१४ रोजी सायंकाळी वार्धक्यावस्थेमुळे दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ९० वर्षे वयाचे होते.

त्यांच्या पश्चात् पत्नी, दोन मुले, डॉ. गीतकुमार व विठ्ठलराव, चार मुली, जावई, सुना व नातू-नाती असा विशाल परिवार आहे. श्री हाजगुडे अलीकडील दोन वर्षापासुन अंथरूणावर खिळून होते. मूळचे किनी (ता.जि.उस्मानाबाद) येथील राहणारे दिवंगत आण्णारावजी अलिकडे लातूर येथील आपल्या मुलांकडे वास्तव्यास होते.

लहानपणापासूनच प्रखर राष्ट्रनिष्ठा अंगी असलेले अण्णाराव भारतीय सैन्य दलात दाखल झाले. १९४५ ते १९७२ या २८ वर्षाच्या कालखंडात त्यांनी **सुभेदार** पदावर राहुन देशाची सेवा केली. चीन व पाकिस्तान बरोबर झालेल्या युद्धात त्यांनी विविध ठिकाणी मोठ्या शौर्याने शत्रूंशी लढा दिला. सैन्यदलातून निवृत्त झाल्यानंतर त्यांनी शेतीकार्यामध्ये लक्ष दिले. मितभाषी, स्वाभिमानी व धाडसी वृत्ती असलेल्या अण्णारावांचा गृहस्थाश्रम सफल ठरला आहे. आपल्या मुलां-मुलींना उच्चविद्याविभूषित करून व सुसंस्कृत बनवून त्यांनी सर्वांना सक्षमपणे जगण्याचे प्रेरणा दिली.

दिवंगत श्री हाजगुडे यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी शहरालगतच्या रेल्वे स्टेशन परिसरातील त्यांच्या शेतात पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. सर्वश्री पं. ज्ञानकुमार आर्य, प्रा.चंद्रशेखर शास्त्री, डॉ.नयनकुमार आचार्य, अनंत लोखंडे, रामेश्वर राऊत, धर्मदीप लोखंडे आदींनी हा अंत्यविधी पार पाडला. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभेचे उपप्रधान श्री राजेन्द्र दिवे यांनी सर्व आर्य समाजांतर्फे श्रद्धांजली वाहिली. यावेळी विविध स्तरातील प्रतिष्ठित मान्यवर मंडळी मोठ्या संख्येने उपस्थित होती. नंतर श्री हाजगुडे यांच्या घरी पं. ज्ञानकुमार आर्य यांच्या पौरोहित्याखाली शांतियज्ञ संपन्न झाला. दिवंगत आत्म्यास शांती व सद्गती लाभो, अशी ईश्वराकडे प्रार्थना ! शोकाकुल हाजगुडे कुटूंबियांच्या दुःखात प्रांतीय सभा सहभागी आहे.

thearyasamaj.org

आर्य समाज, परली-वै. द्वारा संचालित स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुलाश्रम में

दानप्रदात्री माता स्व. शान्तिदेवी मायर(लन्दन) द्वारा प्राप्त १५ लाख रूपयों के पावन दान से

रूग्णों की सेवा में मराठवाडा (_hmamï->) की पावन सन्तभूमि में सर्वप्रथम उद्घटित

स्व. दीवानचन्द मायर स्मृति 'संजीवनी आरोग्य मंदिर'

शरीर शुद्धि से स्वास्थ्यलाभ, रोगनिवारण व सुंदरता प्राप्त करो।

औषधिविना विविध प्रकार के जीर्ण रोग, मधुमेह, रक्तचाप, हृदयविकार, कर्करोग, वातरोग, आमवात, कुष्ठरोग, मोटापा, चेहरों व आखों का कालापन, मुखमण्डल विद्रुप होना, वांग आदि के साथ मानसिक तान तनाव, निराशा, उद्विग्नता, पागलपन, आदि रोगों का शरीर शुद्धि के माध्यम से सम्पूर्ण इलाज। इसके लिए योग, प्राकृतिक व आयुर्वेद चिकित्सा के द्वारा स्वास्थ्य लाभ का सुनहरा अवसर इस आरोग्य मन्दिर में!

आरोग्य मन्दिर की विशेषताएं

* तज्ज्ञ एवं अनुभवी वैद्यों द्वारा इलाज।
* महिला व पुरूष रूग्णों के लिए स्वतंत्र चिकित्सा कक्ष।
* महिला रूग्णों के लिए अलग से महिला परिचारिका।
* रूग्णों की भोजन व निवास की अल्पशुल्क में व्यवस्था।
* शुद्ध हवा-पानी व निसर्ग का सान्निध्य।
* आध्यात्मिक जीवनयापन के लिए प्रयत्न।

चिकित्सा समय
प्रातः ६ से ९/सायं. ४ से ६

रूग्ण जांच व पंजीकरण
प्रातः १० से १२ बजे तक

पंजीकरण शुल्क रू. ५० (प्रति रूग्ण)

चिकित्सक

वैद्य विज्ञानमुनि (मोबा.९९७५३७५७११) **डॉ. ब्रह्ममुनि** (मोबा.९४२११५११०४)

thearyasamaj.org

स्वयंपाकी जगन्नाथाकरवी दुधामध्ये विष मिसळून ते स्वामीजींना देण्यात आल्याने त्यांच्या पोटात भयंकर त्रास सुरू झाला. सकाळी डॉ. अलीमर्दान खान यांनी इंजेक्शन व इतर औषधींद्वारे स्वामीजींच्या शरीरात अधिकच विष घालविले.

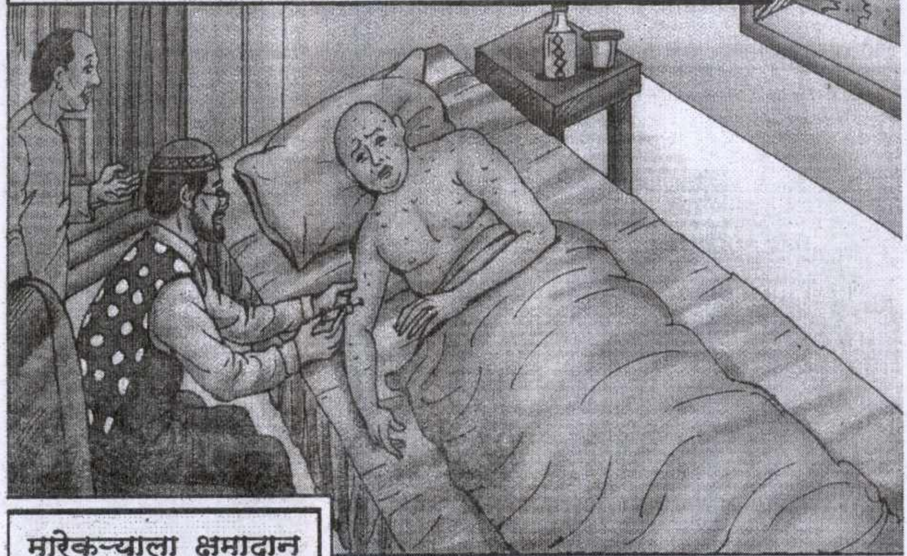

मारेकऱ्याला क्षमादान

स्वामीजींच्या साऱ्या शरीर अवयवातून विष बाहेर पडू लागले. शेवटी त्या स्वयंपाक्याला आपली चूक लक्षात आली. त्यांने स्वामीजींजवळ जाऊन माफी मागितली.

thearyasamaj.org

मृत्युंजयी दयानंद

अजमेर मध्ये ३० ऑक्टोबर १९८३ ला अत्यंत कष्टकारक परिस्थिती उद्भवल्यानंतर प्रसन्नचित्त अशा स्वामीजींना योगमुद्रेत राहून प्राण त्यागतांना पाहून गुरूदत्त सारख्या नास्तिक तरूणाचे जीवनच पालटले. हाच युवक पुढे पं. गुरूदत्त नावाने वैदिक धर्माचा कट्टर अनुयायी बनला.

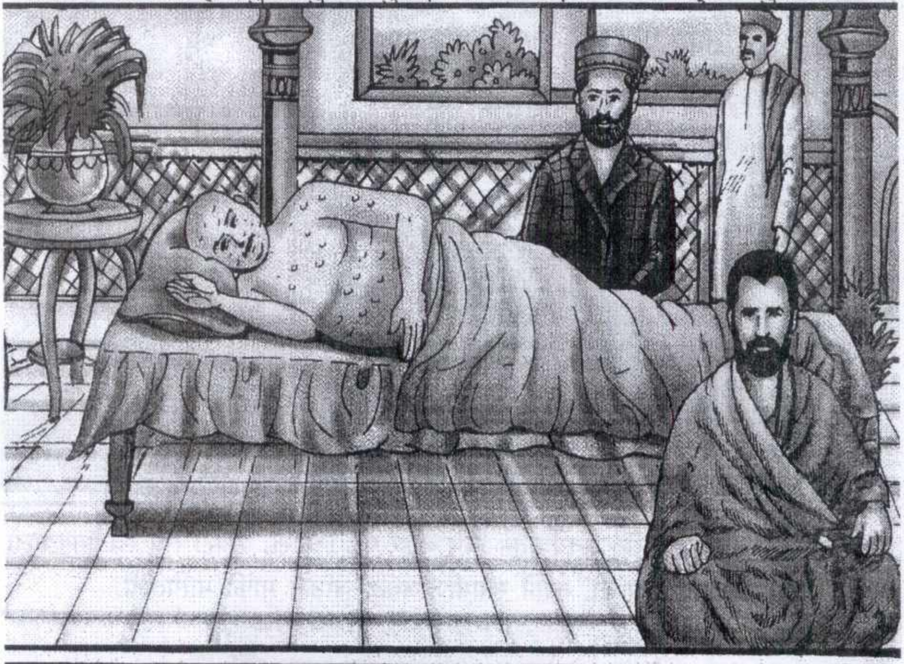

वेदचिंतक-पं. गुरूदत्त विद्यार्थी

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी यांचा जन्म २६ एप्रिल १८६४ रोजी मुलतान नगर येथील मुहल्ला मातारांवला येथे झाला (हे गाव सध्या पाकिस्तानात आहे.) त्यांचे वडील लाला रामकृष्ण हे एका शाळेत शिक्षक फारशी भाषेचे चांगले विद्वान होते. वडिलांचे गोत्र अरोडा होते, पण आपल्या पांडित्यामुळे गुरूदत्त हे **पंडित** म्हणून ओळखले जात होते.

thearyasamaj.org

आर्य विद्वान नेता ब्र. राजसिंहजी की अन्तिम बिदाई ।

ओ३म्
ध्वज में
लिपटा
ब्र. राजसिंहजी
का पार्थिव
शरीर

दिवगंत
ब्र.राजसिंहजी
के दर्शन करते हुए
महाशय
श्री धर्मपालजी
(एम.डी.एच.
मसाले)

शवयात्रा में
अर्थी को कंधा देते
हुए विनय आर्य
एवं अन्य ।

thearyasamaj.org

REG.No. MAHBIL/2007/7493 *Postal No. L/Beed/18/2015-17

सेवा में,

श्री

प्रेषक -

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,

आर्य समाज, परली वैजनाथ.

पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

जीवेत् शरदः शतम् !

परोपकार, समाजसेवा, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार तथा नागपुर शहर व विदर्भ, म.प्रदेश में आर्य समाज की गतिविधियों को बढाने में कार्यतत्पर आदर्श आर्य दम्पती

श्री.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य

(प्रसिध्द भजनोपदेशक व गीतकार, नागपुर)

सौ.करुणादेवी आर्या

(अवकाशप्राप्त मुख्याध्यापिका, मन्त्राणी, महिला आर्य समाज, जरीपटका, नागपुर)

के गौरव में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेंट !